

## आश्रय आपनारोऊना नाम.

- २१ पटवारी कालु रांमजी कांनमल वालोतरा मारवाड
- ११ बंदा हजारी मलजी बल्लराजजी वालोतरा मारवाड
- ८ सालेछा हजारी लालजी सागमांणी वा । पंचपदरा मारवाड
- ७ अन्यावरण सोड मलजी बल्लराजजी वालोतरा मारवाड
- ७ साकालु रांमजी हजारी मलजी वक्तुजी वा । छेत्रावा मारवाड
- ५ साभांनी रांमजी प्रसादीरांम वा । वालोतरा मारवाड
- ५ पटवारी हस्ती मलजी शनण मलजी वालोतरा मारवाड
- ५ दांती मुकनदासजी मुलतांनमल वालोतरा मारवाड
- ५ साबुध मलजी आसारांम वा । वालोतरा मारवाड
- ५ अगर बाल सारांमचंदजी भगवांने दासजी वालोतरा मारवाड
- ७ अगर बाल साटो कमरांमजी सेवारामजी वालोतरा मारवाड
- ५ अगर बाला बीलासी रीमजी सांवत रांमजी वालोतरा मारवाड
- ५ लुंकड रावत मलजी बल्लराजजी वालोतरा मारवाड
- ५ श्री श्री माल वस्तीरांमजी छगन लालजी वालोतरा मारवाड
- ५ चोपडा मलजी हजारीमल वालोतरा मारवाड
- ५ सासोर दारमलजी पीरांणी वा । मुंगडा मारवाड
- ५ दांती तारचंदजी चुनी लालजी बलोतरा मारवाड
- ४ सांहीदुजी रुगनाथमल वा । उमरलाइ मारवाड
- ४ साप्रभु ललाजी भांनंणी वा । थोभ मारवाड
- ३ साचुनी लालजी अमरांणी वा । वालोतरा मारवाड
- ३ सालसी रांमजी घमडीरांम वा । वालोतरा
- २ साप्रभु लालजी छोगांणी वा । वालोतरा मारवाड
- ३ मागीर घारीमलजी कुनण मलजी वालोतरा मारवाड











मिले ॥ पकड हाथमां । पाद । १० ॥ अमंगलिक ॥ आंवानो रक्षक  
 कहे ॥ बाल आवशो आज ॥ तो त्यां तुमने तुरतहुं ॥ \*मरवादेऊं  
 माहाराज ॥ ११ ॥ निंद्या युक्त स्तुती ॥ †अवर शब्द नृपतीनी  
 नीज नगर ॥ फरे आणने दांण ॥ दीगमल सगला देशमां ॥ ताहरी  
 माने आण ॥ १२ ॥ हासी निंद्या ॥ जीव घणा जुग जगतमां ॥  
 लेकीर्ती गणीलाख ॥ ए असोप आपुं तने ॥ लेखोवो भरी राख ॥ १३ ॥  
 देखाती जुल ॥ धुमाडो सिंदुर समो ॥ काजल जेवी झाल ॥  
 चुना जेवा कोयला ॥ राख गुलाबी लाल ॥ १४ ॥ कीलष्टार्थ  
 जाऊं गती जो जाय त्यां ॥ करुं ज्यारे लोक ॥ अथाक गुण  
 वीचारतां ॥ सरस वये छे शोक ॥ १५ ॥  
 अर्थ—हे लोको ज्यां जायनो झाड होय । त्यां ज्यारे दुर्गधी करुं ।  
 त्यारे तेनी सुगंधीनो घणो गुण वीचारतां । मारा मनमां सारो शोक  
 वये छे । कदापी चीत्र काव्य के अर्थ वे वाली कवितामां कीलष्टार्थ  
 आवे ते भुल कहेवाय नही । एक शब्द दुजी वेला आवे । ते पुनरु  
 मन दोष कहेवाय ॥ इति रहस्य ॥

पुनरुक्त । राजकुंवर सारो सरस ॥ जुवान तेजो सोय ॥  
 पण ननास जाणतो ॥ जो न भणेलो होय ॥ १६ ॥ दोस नही  
 पणनातो ॥ फरे अर्थ आकार ॥ सरस बुधि जो मनुपती ॥ तेहनां  
 माग सीता ॥ १७ ॥ हे हरी हे हर हे हरी ॥ तुं मुखनो दातार ॥

। पाद ए अप शब्द छे.

\* मरवादेऊं अमंगलीक शब्द हे. † अवर ए नी या शब्द छे.





दोलतराये ॥ उत्तर एमांथी लीधां ॥ सातेइ समजीज छे ॥ २७ ॥  
 गुढोतर चोपाई ॥ खेदुने शेनु बढुकांम ॥ वीजा पक्ष तणुं गुं नाम ॥  
 जो समजे नही उतर सद्य ॥ तो कहुं छुं जाहलवद ॥ उत्तर । हल  
 कहो । नुन्यार्थ दोहा ॥ नग दुहीता पति पुत्रना ॥ वाहन धरनी  
 नार ॥ रवी तेना पीतुये पडयो ॥ पण नाव्यो भरतार ॥ २८ ॥  
 नग, पर्वत, दुहीता, पुत्रीगंगा, पती, शीव, कारतीकस्वामी, वाहन मयो  
 धरनी, वीष्णु नार लक्ष्मी, पीता समुद्र, तेने पर मूर्ध पयो अस्त थयो  
 पीण भरतारनु आवो । दी । दीवाली । वी. वीजयदस्य । उ । उतरायन ।  
 ऊ । ऊतासना । वलेचना । आवानो कोल हतो पीण भरतार न आव्यो.  
 तेथी उछाट थाय छे ॥ २९ ॥ अधिकार्य ॥ विदीउ ऊवना वायदा  
 ॥ बीत्या जोता वाट ॥ सुझ हीयडा मांहे सखी ॥ उपज्या अधिक  
 उचाट ॥ ३० ॥ सर्वतो भद्र ॥ अनुष्टुपच्छद ॥ मांगुमु एक ते  
 आपो शापथी लक्ष्मी जोखसे ॥ ज्यां मुधी सूर्यने चंद्र ॥ हिंदु शीश  
 शिखावसे ॥ ३१ ॥ गामुंत्रीका । अश्वगतीचंद । कपाटबंधेद  
 ॥ दोहा ॥ सार सार उर धार नर ॥ धर शीरपर करतार ॥ झेरवेर उर  
 दुरकर ॥ परहर परधरनार ॥ ३२ ॥ इत्यादिक अगणीत दसा । रचना  
 चीत्र वीचीत्र ॥ दखाडीदीशी मात्रमे ॥ मनमा धरज्यो मीत्र ॥ ३३ ॥  
 धनी उपजे जे अर्थमां ॥ उत्तम कविता एह ॥ ग्रंथ बधे वीगते लखे ।  
 कहुं हुंकांमां तेह ॥ ३४ ॥ धनीनु उदाहरण ॥ नर वेन्याया-  
 धीशनी ॥ भली करी मे भेटा ॥ मुख मोटो छे एकहुं ॥ एकनो मोटो पेटा ॥ ३५ ॥  
 गनजेद । गनधुर अछर के कहे ॥ जानं छेउ, गन अंग ॥ गन स्वामीते



जानीए ॥ रस दै अरी परमान ॥ ४५ ॥ याके फल ॥ ठप्यै ॥  
 मम ऋधि जऊ यमीदास लछ बंधही मीउ जानो ॥ मीत रीपु पो  
 करत. सबही सुख भृत्य भृत्य मानो ॥ भृ मिसिद्य भउ दै हां  
 जानि भृत रीपु है हरवै दे उदास हे वोफलो ॥ मीत साधारन कर  
 ॥ उभृ विपतरोध उस दे रीपु ॥ भृत्य मुन्य रिम जान नीय ॥  
 तिय नास रिपु ॥ भृत्य हान रिउ ॥ कवि जन दुगुन विचार की  
 ॥ ४६ ॥ याकी मुची ॥ दोहा ॥ मीतमीत अरु मीत दासही ॥  
 ॥ भृत्य मीत भृत भृत जान ॥ मीत्र उदास मीलि हितो ॥  
 यगन शुभ परीमान ॥ ४७ ॥ अशुज कथन ॥ दै उदास उस रिपु  
 मीत रीपु ॥ भृत्य रीपु ही उदास ॥ भीउ भृतउ मीतरु ॥ उभृत  
 मीत रीपु दै अशुभ प्रकाश ॥ ४८ ॥ दग्ध वरनन कथन ॥  
 द्रव घन धर खभ अष्टंड ॥ दग्ध वरन परमान ॥ कवऊ आदिनऊ  
 आनीए ॥ कविजन परम मुजान ॥ ४९ ॥ याको फल ॥ ठप्यै ॥  
 हहो करे धन हान ॥ झझो नीत मत झक झोरे ॥ घयो करे तन  
 गान ॥ ननो मुन नासनी होरे ॥ धयो करे मुन्य धाम ॥ ररो तन  
 रोग कटावन ॥ रग्नो करे तन्य मृत्य ॥ भयो नीत प्रते भ्रमावत ॥  
 प भद्र वरन फल भशुभ मय ॥ शुभ फल सबही कोहरे ॥ परि त्याग  
 फगो. कवि मिय कही ॥ कवित आद वर्जित करे ॥ ५० ॥  
 नाम मंजा गीनती ॥ चोपई ॥ मेखरूचंद एकको नाम ॥  
 मेख मुगम दोय अभिगम ॥ भवनरु लोक तीन परमान ॥ गुतीरुदे  
 चारको भग ॥ ५१ ॥ बांन पंचका कहे मृगिध ॥ पष्ट कतु वको



जान भज मध्य तिहि नाम ॥ हे सुखको धाम ॥ १० ॥ प्रभुजीनी  
 स्तूती दोहा ॥ जय जय अडग जगपती ॥ जय मुख निधि साक्षा  
 ॥ जय जय जननी जनक ॥ जय जय प्रभु प्रख्यात ॥ ११ ॥  
 ठंद त्रीजंगी ॥ जय जय प्रभु प्रख्याता ॥ पद पंकाता ॥ सुगुण  
 गणाता ॥ गुणज्ञाता ॥ तुं भगनी भ्राता ॥ दील अवदाता ॥ शुभसं  
 भाता ॥ साक्षाता ॥ जय विश्वविधाता ॥ अलख लखाता ॥ मुक्तम  
 नाता ॥ मुद माता ॥ जय जय जग त्राता ॥ तुं पीतु माता ॥ १  
 सुख साता ॥ सुखदाता ॥ २ ॥ जय पुर्ण प्रकाशी ॥ विश्ववीलामी  
 ॥ अखील नीवासी ॥ आकाशी ॥ जय अचल उजासी ॥ विष  
 विनासी ॥ छत नीज दासी ॥ छे खासी ॥ ऋषि सहस्र अठ्यासी ॥  
 सिध चौरासी ॥ तत्व तपासी ॥ चीत चाहता ॥ जय जय जग  
 त्राता तुं पीतु माता ॥ दे सुख साता सुख दात  
 ॥ ३ ॥ जय जय जगस्वामी ॥ सदगुण गामी ॥ निर्मल नामी नई  
 खांमी ॥ जग अंतर जामी ॥ अचल अकामी ॥ शुभ विश्रामी ॥ सु  
 धांमी ॥ प्रभु तुज पद पामी थाय प्रणामी ॥ आत्म रामी जनथात  
 ॥ ४ ॥ जय ॥ जय मर्वाधारा ॥ मुख करनारा ॥ प्रीतम प्यारा ॥ सु  
 गारा ॥ तुज मनथी न्यारा ॥ जे नगदारा ॥ भयना भारा भर  
 जारा ॥ जय ॥ ५ ॥ तुं ममग्र्य तरना ॥ तारण करवा ॥ अभय  
 भयना ॥ भय हरना ॥ दुःख आदरवा ॥ भगनी धरना ॥ गुण ब  
 जना ॥ गुण मरना ॥ चऊं कीर्ती उचरवा ॥ टीक थड टरवा ॥



॥ तामरनेन-तांवाजेवी आंखवालो ॥ तुंगा-उंचा उद्धत ॥ तोटक  
 तुटेल ॥ दानिका-देनारी ॥ दिवा-दिवस ॥ दुमीलाप-दुष्टमीलाप  
 दूत विलंबीत-दोडवुं ने उभो रहेवुं ॥ नग-परवत ॥ नय-नम्रता  
 नल-रामनो मुभट वांदरो ॥ नव पल्लव-नवा पांढडा ॥ निशिपाल  
 राते चोकी देनार ॥ पय-दुध ॥ पुष्पीताग्रा-टींगीओ उपर फुलवा  
 वेलो ॥ प्रभावती-कांतीवाली ॥ प्रतिमाक्षरा-थोडा अक्षरवाली  
 ॥ प्रीयवंदा-वाहलुं बोलनारी ॥ भासकी भासकी-वंदीखानो  
 भमरावली-भमरानीपंक्ती ॥ मणी बंध-हाथलुं कांडुं ॥ मत मयंद  
 मचेलोहाथी ॥ मंदाकांता-गांडी अने गभराएली ॥ मधु-मिठाश  
 मल्लीका-एक जाननु फुलनो झाड ॥ माणवकावलीड-वालक  
 रमन ॥ मुनी गेखर-रूपीनो तोरो ॥ रथोना-गाडीनो अभीमान  
 रंभा-अपसरा ॥ वह्नी-वेलो ॥ वंशस्थ-वचमां रहेनार ॥ व  
 नीलसा-वसंतना तीलकना नाली ॥ विधुतमाला-विजलीनो जगो  
 चिमोटा-मात घामेली ॥ वैशदेवी-नीत्य होमकरवा वालो ॥ शर  
 वाग ॥ जगत-जगत ॥ जालिनि-जिहाल ॥ रीकरणी-परान ॥  
 लिखा-लोखी ॥ सींग-तालक ॥ शूणी-माला ॥ शैल-परवत ॥  
 शेलीका मोरनी ॥ समानिका-नरारी ॥ समुद्रि-जयाराळो ॥  
 शक्ति-शक्ति ॥ साया गीतीओमा ॥ सारंगी-सारा संगतालु ॥  
 सारंगी-सारंगी ॥ सारंगी-सारी ॥ सारंगी-सारी ॥ सारंगी-सारी ॥  
 सारंगी-सारी ॥ सारंगी-सारी ॥ सारंगी-सारी ॥ सारंगी-सारी ॥

॥ सारंगी-सारी ॥ सारंगी-सारी ॥ सारंगी-सारी ॥





॥ ठठने दीन कही पचीसी ॥ सफल फली मुज आस ॥  
इती श्री पचीसी संपुर्ण ॥

॥ टुहा ॥ वमो वमाइ नांकरे ॥ वमोन बोले बोल ॥  
हीरामुखसें नही कहे ॥ लाख हमारा मोल ॥

॥ अथ श्री मुनिचंद्र गुरीस्वरजी साहेबकी  
सहाय लीख्यते ॥ हारे मारे ॥

तप गह्व पतीनां दरिसणथी सुख थायजो ॥ वीर  
पटोदर देखी मनमां गह गहेरेलो ॥ हां० ॥ सुमतार  
सनां दरीया जग सुख दाय जो ॥ लदीयापुर नयरे  
गुरू समोसरथा रेलो ॥ १ ॥ हां० ॥ संघ चतुर विध  
आवि प्रणमे पायजो ॥ जांणी अवसर गुरूजी धर्म  
कथा कहे रेलो ॥ हां० ॥ सुणता जविना मनमा आनंद  
थाय जो ॥ जीम जलधारे चातक आतम पोखतारेलो  
॥ २ ॥ हां० ॥ पांच सुमतीने तीन गुप्ती चीत धारजो ॥  
पंचाचारते पावे चारित्र नीर्मलोरेलो ॥ हां० ॥ अठारे  
सहस सीलंगना धारी जाणजो ॥ क्षम्या संवर संजम  
सुंते अलं करयारेलो ॥ ३ ॥ हां० ॥ संचेती गोत्रते आप  
उधारयो श्री गुरु रायजो ॥ जीकचंदजीके हुलमां गुरु



॥ ठठने दीन कही पचीसी ॥ सफल फली मुज आस ।  
इती श्री पचीसी संपुर्ण ॥

॥ छुहा ॥ बन्धो बन्धाइ नांकरे ॥ बन्धो न बोले बोझ ।  
हीरामुखसें नही कहे ॥ लाख हमारा मोल ॥

॥ अथ श्री मुनिचंद्र गुरीस्वरजी साहेबकी  
सहाय लीख्यते ॥ हारे मारे ॥

तप गह्व पतीनां दरिसणश्री सुख थायजो ॥ वी  
पटोदर देखी मनमां गह गहेरेलो ॥ हां० ॥ सुमता  
सनां दरीया जग सुख दाय जो ॥ लदीयापुर नय  
गुरु समोसरया रेलो ॥ १ ॥ हां० ॥ संघ चतुर वि  
आवि प्रणमे पायजो ॥ जांणी अवसर गुरुजी भ  
करी कहे रेलो ॥ हां० ॥ सुणता जखिना मनमा आनंद  
पाय जो ॥ जीम जलभारे चानक आतम पोखनारेलो  
॥ २ ॥ हां० ॥ पांन गुमतीने तीन गुप्ती नीत धारजो ।  
॥ ३ ॥ पावे पावे जागित नीमिलोरेलो ॥ हां० ॥ अत्रि  
मया सींगना भागी जाणजो ॥ कसया गंजर गंजम  
नृप अं कसयांग्यो ॥ ४ ॥ हां० ॥ गंजली मोत्रने आप  
॥ ५ ॥ जीम गुप्त मयजो ॥ नीकांदजीक हृदमां गुप्त



लकजुं चली जात ॥ हमही चलेंगे गये ॥ ग्वलकं  
 देखते ॥ ७ ॥ अथ दुजी अशरण जावना ॥ चौपड ॥  
 जीवद्रव्य पुजलमे मेरता ॥ आयु करमश्रीत जोलु सता ॥  
 थिति पुरण जये कहाये मरणा ॥ तादीन नही काजका  
 शरणा ॥ सवैयो ॥ ३१ ॥ मंत्र तंत्र जंत्र जरी ॥ धरीही  
 रहत धरी ॥ धरी कजंहो तन वसाज काज प्रांनको ॥  
 दोर धाव उपद उपावु कतु चले नांही ॥ दीपजुं उदहास  
 जात ॥ पैरयो पव मांनको ॥ दुरहीते देखतही ॥ रो  
 रहे खग कुल ॥ परत अचिंत्यो आय ॥ दाउजुं शीवा  
 ॥ नको ॥ ठारी सब आर जार राज माया मोह जार  
 ॥ अंतकाळ शरण जजन जगवंतको ॥ ७ ॥ पवनके पुतसें  
 प्रचुत जो सपुत पुत ॥ कांहां तात तारंगे ॥ सकी-  
 न्हो तात तारे हे ॥ चक्रधर सगरके ॥ तनयरु जार  
 साठ ॥ निमतके आएदेप ॥ पलमे प्रजारे हे ॥ दरबकी  
 कोरा कोरी ॥ अरव खरव जोरी ॥ नंद राज जूजं  
 काहा मोत तेनी वारेहे ॥ अजर अमरराज साहाराज  
 सुख काज ॥ जपजगदीस जने पतित उदारेहे ॥ ८ ॥  
 हंस गती गांमनी ज्युं ॥ देह दुती दांमनी ज्युं ॥ कांम



( १० )

हीन ठेहराता ॥ अधिके लरध जात ॥ पात उयुं वगु-  
लाको अथीर परीनयोहे ॥ आही ते संसारचाव धरज  
चेतन राव ॥ अपनो सुचावगही ॥ जोती रूप जयोहे  
॥ १३ ॥ कवही उत्तंग अंग ॥ होत ॥ हेम लंगसंग ॥  
॥ कवज पतंग जुंग ॥ कीटक अकारजुं ॥ कवजक ध-  
नी नीरधनी सुखी दुखी जीव ॥ कवजक वेद वीप्र  
कवज चंमारजुं ॥ जेसे नट ऐक जेप ॥ थटत अनेक  
थाट ॥ तेसे एक जीवके अनेक अवतारजू ॥ धनधना  
शालिजद्र शुलीजद्र जंघु बज्र ॥ त्यागीजे संसारके ॥  
जेसे अजय कुमारजू ॥ १४ ॥ अथ एकुलत्व जावना कथ-  
न ॥ दोहा ॥ जगता करता हे नही ॥ करता चेतन राय  
॥ जो करता सोइ जोगवता ॥ गही एकत्व स्वजाव  
॥ १५ ॥ मवेयो ॥ ३१ ॥ कोनतेरे मान तात ॥ कोन तेरे  
अंग जान ॥ कोन त्रान जान ॥ मवही स्वार्थी ॥ अ-  
रु मटाउ पर ॥ लोकके नटाउ दोन ॥ धनकुं बटाउ  
अन ॥ भीखुं भनार्थी ॥ तार्कीगत कोनबुजे ॥ स्वार-  
थी मोट आमंजे ॥ नमं अरुजे कोच ॥ नर्तक परमार्थी ॥  
नान विगार चीन ॥ नुं नोदं अके छोनीन ॥ उपट





पुजल मुरतीक ॥ ओर हे अमुरतिक ॥ जीव द्रव्य  
 तन ॥ अजीव पांच मांतीये ॥ अपनो स्वभाव धरी  
 हे सबै द्रव्या जदपी सीलेहे तोउ ॥ न्यारे पही सांती  
 योही अन्य जाव जानी ॥ राज जीव न्यारो मांती  
 नीह चेहेनी गमवांती ॥ संशयन आनीये ॥ २० ॥ न्य  
 धनधान धांस ॥ गांस ठांस कांस सब मात तात अ  
 न्यारे ॥ अंतकाल पायके ॥ राज अविनासी लख चोरा  
 को वासी ॥ कजुं होत न उदासी जगमासी सदा मन जाय  
 सीथ्या मद ठक्यो वक्यो सीथ्या मेरी मेरी ॥ सब  
 हे बीवेक ॥ खीतमो घनठाइके ॥ वाजीकुं संकेली उ  
 वाजीगर उठ जात ॥ पलकेक खलककुं ख्याल सो  
 खायके ॥ २१ ॥ संध्या काल तरु काल ॥ वेठे अ  
 खग कुल ॥ रात वसी प्रातउमी न्यारे न्यारे जातु हे  
 लेतहे वसेरा रात ॥ पंखी जुं सराह बीस ॥ जोरत  
 प्रीत जोलु ॥ होत न प्रजातहे ॥ गेइनके संगग्वाल  
 मोलतहे सबदीना आवतहे प्रदोष ग्रेह ॥ इकेलं  
 दिखातुहे ॥ एसे अन्य जाव मन ॥ आनीयत र  
 कवि ॥ ग्यांनके उद्योत होत ॥ अग्यांन बीलातु



दीन कीजे तो ॥ खजानो राखिय ॥ तरती कमरो सीढ़ी  
 ॥ नर केहे नवझार ॥ नारीके झग्यारे जुं ॥ वहत अ  
 श्रुची जेसे ॥ मंदरकी मोखीहे ॥ मलमें सुंमठी गठी ।  
 काच कीसी जंपी कीधुं ॥ अरंरुकी जुंपी ए सीकायप  
 घोकीहे ॥ २६ ॥ अथ आश्रव जावनां दोहा कार  
 जोहे पापको ॥ जाकर आवत पाप ॥ तासं  
 आश्रव कहत हे ॥ दे आत्म जंताप ॥ २७  
 सवेयो ॥ ३१ ॥ प्राणीको सिहार मृषावाणीको उचार  
 पर द्रव्यकोजुं अपहार ॥ पुरे परीहरीये ॥ नीके नी  
 कांमनीके ॥ कांमसुख दुखहेतु ॥ फीके होत तीन मां  
 ॥ धोखे दिनुं धरीये ॥ सचीत अचीत फुनी ॥ बाहि  
 अंतरगिनी ॥ बंधु हेतु परिगह ॥ पुहनी तेररीये  
 पापनीर पुके ॥ प्रताह मग आश्रवणे ॥ इनहीसुं प्र  
 तीनिने ॥ पीनगर नगीये ॥ २८ ॥ बडे बडे नारण  
 गण ॥ गगनगणे ॥ फरग केवरीभगी फगनदे फंदमें  
 दमदी बगल दाग ॥ वनवन चीजें ओर ॥ । दस  
 नारण ॥ पवन पवनमें ॥ खाने अगाध जात  
 पवन ॥ अगाध ॥ गगनगणे ॥ गीमी दृ



को ॥ धारत सोइ धर्म ॥ ३९ ॥ सवैया ॥ ३१ ॥ दान  
 सीलतप जाव ॥ चारेही वीराजे पाव ॥ विमल विग्यां  
 दग ॥ दया मुखदाखीहे ॥ सोजाको समुह जाको ।  
 विठद विवेक पुठ ॥ निश्चे व्यवहार सार ॥ उने श्रृं  
 साखीहे ॥ संपदाहेतु ॥ दुजंलोकमें सुखदेतु ॥ अमृत  
 श्रवती धार ॥ संतवठ साखिहे ॥ ऐसे धर्म कामधेनु  
 चरती वीचती त्रण ॥ राज तेरे चोरनते ॥ नीकी जांनि  
 राखीहे ॥ ४० ॥ धर्म अर्थ काम ॥ तीनंवर गहीत का  
 म ॥ उत्तम उदार ॥ सुवी सारसन ठानीए ॥ चारुंगत  
 मांजसार ॥ मानवको अवतार ॥ साधन त्रीवरगको  
 चतुर चीत आंनीये ॥ तीनोमें प्रधान बुधि ॥ कहत  
 धर्म सुध ॥ अर्थ कामको ज्युं ॥ धर्म कारण पीठानीये  
 राजनर जव पाय धर्मजो करत नांहि ॥ पशुजुं वीफ  
 ती को ॥ जीव तव्य जानीये ॥ ४१ ॥ मांनी जीनवां  
 जीनो ॥ नीके जांनीपहि ठानी ॥ ज्ञानी धर्म जांनी जी  
 नो ॥ तृष्ठाकुं तोरीहे ॥ जीनकी अमूढता ॥ नगुढा  
 न वोढा जेसे ॥ सुमती आरूढा प्रोढा ॥ जेसे प्रोढ  
 गोरीहे ॥ लेतुन अदता ॥ अजयदानसुं जरता मता ।



होवे शत्रु ॥ ताइ माता विनु स्वार्थ ॥ असाताकी जुं  
 दाता हे ॥ आपसमे राज काज ॥ ज़ीरी गजराज ज़ेसे ॥  
 ज़रत बाजुवल कोन काको ज़ाताहे ॥ चुलणी ज़रायो  
 लाख ॥ मंदिरमें ब्रह्मदत्त ॥ वीरतंत एसोतो सिधांतमें  
 वीख्यानाहे ॥ लोकको स्वरूप एसो ॥ मांऊ  
 ज़ाई ॥ डुनीयांकी सारीयारी ॥

॥ ४६ ॥ अथ बोध डुरलज ज़ाव  
 माणीक सुत कांमनी ॥ ज़ोग  
 डुरलज नही जीवकुं ॥ डुरलज  
 सवैयो ॥ ३१ ॥ थल ज़यो जल  
 ज़यो ॥ तरु पशू पंक्षी  
 ज़यो दांनो ज़यो ॥ न  
 सारी ज़यो ॥ जीपणइ  
 जीन वचन रूची ॥ ब्र  
 ऐज चार सुवीचार  
 साधनके ॥ उत्तमहे  
 पाइवो ॥ नवेर वेर पा  
 ज़सुं ॥ देव गुरु धर्मकुं





नामगने ॥ नवरात्र मन्त्री यम मन्त्र ॥ नवरात्र मा पञ्चक  
रत्ने ॥ नवरात्रमन्त्री गण जगत् ॥ १ ॥

॥ यथ मा मणार्जी मातेव श्री श्री श्री श्री १०८ श्री श्री श्री श्री वि  
नायक श्री फोगिहजी माहाराजा कृपार श्री श्री श्री श्री १०  
श्री श्री श्री भूपालमिहजी हा गण वर्णन ॥ गुणगान जोग्ये ॥

॥ सरस्वती जंमरकी ॥ बनी अनोपम वान ॥ ज  
ज्युं खरचे त्र्युं त्र्युं वधे ॥ वीन खरचे खुट जात ॥ सवेय  
॥ ३१ ॥ सरस्वतीन जुवन ॥ तीहां वाजते पवन ॥ चे  
तन चाहते सुवन ॥ पंथ पुर जानोहे ॥ जाणता सऊ  
गत ॥ होय वेठते जगत ॥ रागरेपसें लगत ॥ तोटे  
नही ठानोहे ॥ तप गठ पती स्वाम ॥ जीनजी कोरव  
नाम ॥ कहे द्रव्य ताई पांम ॥ प्रजुगुण गानोहे ॥ कहे  
कवि जेत सिंधु ॥ सुणहो जवीक वंधु ॥ ४ ॥ वतअँकार  
विंदु ॥ जवपार पानोहे ॥ १ ॥ सरस्वती मात जेसे ॥  
रूपवके तात जेसे ॥ ब्रम्हा या विधाता जेसे ॥ ऐसे  
गुरु ज्ञानीहे ॥ गाजको ज्युं मोर जेसे ॥ चंदको चकोर  
जेसे ॥ जीनवरके नांमको ॥ ऐसे गुरु ध्यांतीहे ॥



( ३४ )

आद अक्षर गुण ॥ फजर उठ करे हरी समरण  
 तेज प्रताप वधे जगमे ॥ सिंधु कीलोलमें प्रगट ज  
 जानुं ॥ हर्ष जइ दुनीजं मनमें ॥ मातकुं देखत बा  
 फुलावत ॥ हरीकी इठा जीम मांखनमे राम रखां हम  
 होवत राजी ॥ एाही प्रह्वजं जग जोवनमें ॥ ६ ॥ पदर्व  
 वरणन ॥ लषमण रामचंद्र बलवंता ॥ बाहीकी पदर्व  
 आपवरीहे ॥ बावन राजाके मांहे सीरोमणी ॥ शि  
 शोद्या वंशकी जीतकरीहे ॥ हिंदु वासुरजहो तुमे  
 उत्तम ॥ धर्म मारग मे बुधि धरीहे ॥ जेतकहे मोय  
 दरसण दीनें ॥ ताहीहे दुविध्या दुर टरीहे ॥ ७ ॥  
 वरण बाघेस्वरी ठंदसें परीवार वखांणतेहें ॥ सर  
 सतपे पृथ्वी पतिराजा ॥ फतेसिंह जगत जस पायो ॥  
 तुम कुलेचंद सुपुतो सोहत ॥ कवर जुपाल सिंह स  
 वायो ॥ जंमारी कोठारी दीवांन बुद्धि वंतजुं ॥ कुमा  
 रगने दुरनछायो ॥ बावन राजनके सीरसोजत ॥ हिंदु  
 वासूर्य एसे नामदीपायो ॥ ८ ॥ कुमाण सनेतो मानन  
 आपत ॥ सजन कुं सूखको जगदाता तुम प्रजावथी  
 जगत सहु सूखीयो ॥ सुगुणाकोतु दे सूखसाता ॥



प्रजा प्रणीमा ॥ जेत सागर या जगतमें ॥ मंगलमा  
जपा ॥ ३ ॥ इती नृप जसार्णन ॥

॥ गग मन्त्राचार कहेन मर्गीय पमाणे ॥ १८ : गग गावे गी ॥

मंचन उगणीमे वरस सिनोवने ॥ काली मास मण्ड  
इनु सारी ॥ जकपक दसम गिनाय जुं ॥ चांगे एक  
वजे सुविचारी ॥ मुनी चंदगुं हिदांग पत्नीकी ॥ मुखा-  
कात शीव मेहल नीहारी ॥ जेत कहे सोय आनंद  
उपनो ॥ हिडुवा सूर्य तुम येऊं नारी ॥ १ ॥ हिडुवा  
सूर्य प्रथम पभार्या ॥ वेठककी सक नइ तयारी ॥ परम  
गुरुजी पीठे तीहां आवत ॥ खटजण नृपति सुखकारी  
वेठत नयन हरे जण मन ॥ सुगुरु तव आसिस उचारी ॥  
जेत कहे गुरु कृपा करी मनसैं ॥ उपदेश वांणी कहतहं  
प्यारी ॥ २ ॥ फतेसिंह नृप हात सेंदीनो ॥ दुसालो एक तेन  
जरी कीनारी ॥ रूपक पांच धरया गुरु आगे ॥ सरूपसिंह  
कोशको सुखकारी ॥ तव गुरु नृपने जेटणो दीनो ॥ पुस्तव  
ज्ञान बहरको नारी ॥ जेतसागर कहे नृप जीवो ॥  
फते सिंह तुम पर उपगारी ॥ ३ ॥ कवर जूपाळ सिंह  
माहाराजा ॥ शंजु मंदिर मे वेठककीनी ॥ रूपक चार  
धरया गुरु आगे ॥ शुद्ध मनसैं गुरु आसीस दीनी ॥



( ३७ )

ध्यान करयो सदा ॥ मन धरीपर उपगार ॥ दया दान  
करता रहो ॥ जांणी अश्वीर संसार ॥ ५ ॥ दाने दोलत  
पांसो ॥ सीले जस सौजाग ॥ तपस्या कर्म खपावणी ॥  
जावे रुधि अथाग ॥ ६ ॥ इम जांणी जीन धर्मको ॥  
धारो रुदयमें ध्यान ॥ देव गुरु चीत धारजो ॥ जुंपावो  
सनमान ॥ ७ ॥ कवी प्रगट करता रहे गुण अवगुणनी  
पीठाण ॥ विण जाण्या नवी कह शके ॥ ऊठ न दाखे  
वांण ॥ ८ ॥ कागद देजो ऊसखनुं ॥ लीखजो लायक  
कांस ॥ धर्म स्नेह बधतो रहे ॥ सुणजो सऊ गुणवांन  
॥ ९ ॥ संघ चतुर वीध महंतहो ॥ ऊंठु वाल अज्ञान ॥  
जुलचुक माफी करो ॥ गुरु पदको सनमान ॥ १० ॥ संवत  
सागर धीपठे ॥ अंक इंद्रसु प्रमाण ॥ मागसर मास  
नेत्र तीथो ॥ वार आदित्त वखाण ॥ ११ ॥ इती ॥

॥ श्री संघ तरफमें अग्रेसरी कोठारीजी काजस वर्णन ॥ दुहा ॥

कोठारी बलवंत नर ॥ बलवंतसि जगजांण ॥ तेह  
आद अक्षर तणा ॥ गुण सुणजो जन जांण ॥ १ ॥  
संवयो ठंद ॥ २३ ॥ कोल वचन करत मनसाचे ॥ ठाम  
ठाकाणे ठें जस पायो ॥ रुपन देवकी कीरपा तो पर ॥  
बधे तेज तोय मान सवायो लक्षण योग लग्न सुधी उत्तम ॥





नाना पुर मूलपरमें ॥ २७ ॥ गोमागो नाथ ॥ ३॥ न  
 जगत्तांही चाहरी ॥ राध विहिमेंमें कीध ॥ गुण गुः  
 होयके ॥ पीमज निपा मोय दीध ॥ ४ ॥ जेत सा  
 मन दृग्ग धर ॥ मर यावमके काज ॥ प्रनके गुण  
 वत जए ॥ चांधी कविना पाज ॥ ५ ॥ मैद पाट  
 व्यधिपती ॥ फतेसीह जूपाज ॥ चीरंजीन या जगतमें  
 गउ ब्राह्मण प्रतीपाल ॥ ६ ॥

॥ अथ मेंताजी कनइयालालजीके गुण वर्णन ॥ दुहा ॥

दीपक ज्युण सोजतो ॥ शिंशोया वंश मजार ॥ क  
 नैयालाल नामे प्रगट ॥ जाणत सहु संसार ॥ १ ॥  
 सवेयो ठंद ॥ २४ ॥ आद अदरके गुण ॥ मेगल ज  
 चाले मदमातो ॥ तप तेजसें क्रोध मद पुर हठायो ।  
 करत काम श्रीसंघ अगवांणी ॥ वीनयकी बुद्धिसे न्याय  
 वेठायो ॥ इम जन जाणतहे जग सारो ॥ या नरसही  
 चार बुद्धि पठायो ॥ लाखाही लक्षणहे अती उत्तम ॥  
 लक्षण नीचकोते पुर न ठायो ॥ २ ॥ कनइयालालमें  
 तोवरु जागी ॥ नीत्य देवगुरुकी सेवातो सारे ॥ सीतल  
 नाथ प्रजाव जग मोटो ॥ मनस कामना तेह सुधारे ॥



नित्यही ध्यानजनीको धररे ॥ नांम रक्षां जगतही ज  
 वाधे ॥ सुशत काम सदा तुं कररे ॥ वचन गुरुको ह  
 या वीचधारी ॥ जव सागरसें तुंही तररे ॥ १ ॥ सा  
 सतगुरु एकही देख्यो ॥ श्रीविजय मुनी चंद्र सुरी  
 जेसो ॥ ओर जगतमें निजरे नही आयो ॥ ध्या  
 ईश्वर कोही बोवेसो ॥ जागत सोवतही नही वीचरुं  
 दृढ चीत ध्यान लगैयुं केसो ॥ तलफत प्राणमे रो  
 निशिदीन ॥ थोका जलमें मीन जुं तेसो ॥ २ ॥ मीन  
 तलफे मोतके करसे ॥ जंतो तलफुं तुं रागके मारयो  
 स्नेह करमकी जुंकीगती ठे ॥ जेतव देजं कहतही ह  
 रथो ॥ विजेमुनी चंदसुरीजी साहेव ॥ वीन मोते मो  
 आजही मारयो ॥ कोईको घायल कटारी करतहे  
 मोजं तो आप वीरह वीदारयो ॥ ३ ॥ चावतजंमें निशि  
 दीन तोजं ॥ तें तो मुजकुं दुर कर मारयो ॥ कुस  
 खेमको कागद देके ॥ सतगुरु आपको काराज सारयो  
 लीखत लेखमें दरसायो नांही ॥ तेही दगो मुज चीत  
 मारयो ॥ काहा कजं ए गती अगोचर ॥ जेतव दे  
 कहतही हारयो ॥ ४ ॥ संवत सिधि धीपकही दाखां



यके ॥ दीयो ग्यांनसूर लोक ॥ ईश्वर नांम संतारतां ॥  
 गयो सुरीपर लोक ॥ १३ ॥ वारस धारे वजायके ॥ उ-  
 पर वाजी एक ॥ मीनट द्वादस उपर गयां ॥ पोहतो  
 सुरग विवेक ॥ १४ ॥ अमर लोक उपनो जवे ॥ वर  
 त्या जय जयकार ॥ उपासक साधु सत्रे ॥ करतहे चीत  
 वीचार ॥ १५ ॥ जाय संतारे मेकीषे ॥ वेगो जग गुरु  
 ज्ञाण ॥ पद मास नस जीयां थकां ॥ निकस्यो दीगो  
 प्राण ॥ १६ ॥ सवेयो ३१ ॥ समज चतुरां सार ॥ मीलके  
 कीयो विचार ॥ लाया बोलायसु तार ॥ मोल धरवायो  
 हे ॥ मसरू लायाहे दाल ॥ तार गोटी उंचो माल ॥  
 दरजी बोलाया बाल ॥ साज सजवायो हे ॥ नवाय  
 धोवाय राज ॥ कीना सज विधिकान ॥ वांया सत्रे गुरु  
 राज ॥ पुठालो उढायोहे ॥ खमा खमा करे लोग ॥  
 सवे मन धारे सोग ॥ कहे जलो पाटयो जोग ॥ द्वार  
 धारे लायोहे ॥ १७ ॥ पुहा ॥ गाम खोलाहे खांतसुं ॥  
 काय्यो चांमासो सार ॥ निश्चय धारी मनमांयनें ॥ मोटो  
 कीयो वीचार ॥ १८ ॥ जीणी ग्यांनकी जुमीका ॥ फर-  
 मवा जोग जो होय ॥ तेह ग्यांनसुं जइ मीले ॥ टाल



( ४६ )

ठाम ठले हात ॥ पर जन सहु चींता करे ॥ क्या से  
 जासां सोथ ॥ २६ ॥ रेमन अप्पा खंचकर ॥ चिंता जाळम  
 पारु ॥ सुख दुख जे तो पांमीये ॥ ते तो लीख्योळी  
 लाव ॥ २७ ॥ ठवी राते जनमसें ॥ लीख्या विधाता  
 जाळ ॥ फल ते तोही पांमीये ॥ जे तो लीख्यो लीलाव  
 ॥ २८ ॥ सवैयो ॥ ३१ ॥ शरणमें धरणमें ॥ रणमांहे वर  
 णमें ॥ खेती पांती करणमें ॥ जुंझमां हे नारेगो ॥ काज-  
 मेंक राजमेंक ॥ आगवोट ज्याजमेंक ॥ ऊगना जंज  
 जकरी ॥ ऊआ मांहे नारेगो ॥ सुखमेंक दुखमेंक  
 मरी मारी ऊकमेंक ॥ जल अग्नी दीपनय ॥ कीसवि  
 दांगो ॥ नडे कति जेव गुणो ॥ राज तुमे नवि जनो  
 जेव जाने दीनानाय ॥ कोन जांति नारेगो ॥ २९  
 गो ॥ ३३ ॥ आयां आदर देतो हो जगगुरु ॥ वोड  
 गो ॥ जे कीण मेवे ॥ गुण दुखका मीमथो जगमें  
 ॥ जग सागर करो कृण मेंवे ॥ लोक राज सोरीदांग  
 ॥ जग दे ॥ जे पां सद साम्यमें मेवे ॥ क्या मृते का  
 ॥ जग दुखे ॥ यादी मनी मांय कर्दी नही पेड  
 ॥ जग दुख ॥ मनेकी मोत्र आणंद ॥ जीयाजी कुं





सूरी ॥ ३४ ॥ करना मनमे व्याम ॥ कोउदीन मीवना  
 नणी ॥ पोहनो स्वर्गो नास ॥ चाखो तेही मुनीचंद  
 सूरी ॥ ३५ ॥ हुं पापी कर्मी जीव ॥ गुग नहीं नाग  
 लीख्यो ॥ उत्तम जगनो पीव ॥ जोन गयो मुनीचंद  
 सूरी ॥ ३६ ॥ सुतां वेतां नहीं चेन ॥ निंदा पीण आवे  
 नहीं ॥ नेत्र फाटा दीन रेण ॥ कव देखुं मुनीचंद सूरी  
 ॥ ३७ ॥ राग हृती मनमांय ॥ ते डुरे नाठी परी ॥  
 उदासी मनमांय ॥ दे गयो तुं मुनिचंद सूरी ॥ ३८ ॥  
 हसतां न आवे हास ॥ दीलगीरी दीलमां जरी ॥  
 नीकले न पापी स्वास ॥ ब्या उपाव मुनीचंद सूरी  
 ॥ ३९ ॥ जग सुखी याते लोक देखुं हसताऊं सही ॥  
 मनने राखु रोक ॥ विचरतुं मुनीचंदसूरी ॥ ४० ॥  
 हुं जुं आवे याद ॥ विचारयो नवी वीचरे ॥ ए मोटो  
 वेपवाद ॥ राग तणो मुनीचंद सूरी ॥ ४१ ॥ जगनें  
 इसतो देख ॥ हु तो मन राजी रहूं ॥ परने सुखीयो देख ॥  
 नहीं रूतुं मुनिचंदसूरी ॥ ४२ ॥ ए घुरु लाएपाट ॥ कीण  
 नरोसे कर गयो ॥ वीगर विचारी वाट ॥ तुंही चाख्यो  
 मुनिचंद सूरी ॥ ४३ ॥ साधुको समुदाय कीण प्रजु न-



तुं मुनीचंदसूरी ॥ ६० ॥ पांच वरस पट मास ॥ तें  
 सोरी प्रतिपाल करी ॥ पोहतो स्वरगे वास ॥ विरहें  
 मुनीचंदसूरी ॥ ६१ ॥ अत्र तो मोय आधार ।  
 जगमें कोइ दीसे नही ॥ गुरुजी अरजी मनधार ।  
 खेंच सोरी मुनीचंदसूरी ॥ ६२ ॥ तुंसे सुगुण सुजाण ॥  
 आगम नीगम देखी सहु ॥ जातां पीण बुद्धिमान ॥  
 कागद दीयो मुनीचंद सूरी ॥ ६३ ॥ झूहा सोरठो ॥  
 कागद सुं समजाय ॥ खबर एकमें दे गयो ॥ सुणजो  
 सज्ज चीत लाय ॥ ढीलन की मुनीचंदसूरी ॥ ६४ ॥  
 ॥ झूहा ॥ कागद जातो लीख गयो ॥ मनमां आंणी उ-  
 मंग ॥ सार करसे गादि तणी ॥ उदीया पुरको संघ  
 ॥ ६५ ॥ जीहां वीरुध तपायणो ॥ उपायो गुरुराय ॥ ती-  
 हां आय मीजके गयो ॥ गठको राग बताय ॥ ६६ ॥  
 जगतचंद्र सुरीश्वर ॥ तपा विरुध इहां पाय ॥ रांणा  
 नृपत सिंहने ॥ प्रतिबोध्यो गुरुराय ॥ ६७ ॥ हेम वीमल  
 सुरी ऊआ ॥ उपगारी आधार ॥ जक्त प्रगटी सुप्रभ  
 ऊज ॥ संकट दीया सज्ज टार ॥ ६८ ॥ ताही पाट पर-  
 परा ॥ हीर वीजे गुरुराय ॥ अकवरसा प्रति बोधके ॥



॥ अथ माताजीको उपासने का उपाय ॥

माताजीमें अरज है ॥ गोलागर्द शीतल तुं पत  
 उतवाल वीसो शम्भर ॥ अकलमे जाण विवेक ॥ ७  
 उत्तम कुखमें जनमीयो ॥ उत्तम जानिमें होय ॥ उ  
 पद बोहीलहे ॥ उत्तम नर जग जोय ॥ ७४ ॥ उ  
 पीता ते जांणीयें ॥ उत्तम मारगे जाय ॥ उत्तम ध  
 आराधतो ॥ उत्तम पुत्र कहाय ॥ ७५ ॥ उत्तम मा  
 ताहिकी ॥ उत्तम मती बुधिमान ॥ उत्तम पद जग  
 जलो ॥ समदृष्टीको ज्ञान ॥ ७६ ॥ उत्तम जगका मान  
 वी ॥ उत्तम करे सनमान ॥ उत्तम मारग आराधतां ॥  
 उत्तम होय संतांन ॥ ७७ ॥ सवेयो ॥ ७८ ॥ ताहीको  
 धन्यवादे देवतजं ॥ कुखे उपज्यो रत्नही प्यारो ॥ जा  
 गत उत्तम पुन्यही नरको ॥ दुर कीये नहीं होत हे  
 न्यारो ॥ जगमांहे जावे तीहां सजन ॥ आस करत  
 हे लोक हजारो ॥ कारण जोगे कारज ते नीपजे ॥ कारण  
 वीण नहीं कारज प्यारो ॥ ७९ ॥ माताजीको धन्य वाद  
 नीत ॥ जीणे एह पुत्र अमोलक जायो ॥ पुरुष ताको  
 जनम जग देखे ॥ सुपुत्र ताके कुलमांहे आयो ॥ उत्तम



साइरही ॥ सीलजाव साइरही ॥ संतोषधार साइरसेन  
 चोचीये ॥ केतवद्रीदास आस साइरकी लगीप्यास ॥  
 जेतसागर जेसेकी लंगोट चोटलों चीये १ हुदा ॥  
 अवधपुरी पुनि आदले ॥ आखीर कोहरऊार ॥ मेजीत  
 मध्यमीलायके ॥ करता वारंवार २ मीनरासकी मोज-  
 हे ॥ मोटा करेमीलाय ॥ मानवकाइ मोकली ॥ मन  
 मुरजि मावाप ३ अजव अनोखी ओपमां ॥ अरज-  
 करं इनआस ॥ अवकी अवसजं वरं ॥ युं केतावद्री-  
 दास ४ खजानांके आदको त्याग न करीयेहाल ॥ वाकी  
 कापुनिसमजलो ॥ सुरगुरुको ततकाल ५ इती वणाक ॥

॥ अथ श्री नारीके परसंग वीपे छतीसी लीखते ॥

॥ हुहा ॥ उंकार धुरमें समरके ॥ रचुंजवांनी खेद ॥  
 छिछती सीकहतजं ॥ आवजो माताजी वेद ॥ सर्वे-  
 यो ३१ ॥ नरम वांणीकेसाथ ॥ जोमीनीजदोनुहाथ ॥  
 विद्यारूपीदेवो आथ ॥ दासते जासतहे ॥ ऊबुधी को  
 देवोदार ॥ सुबुधीकर दोलार ॥ संतोषको देवुंधार ॥  
 कामते नासतहे ॥ परनारी संगठोर ॥ प्रजु सेतीप्रीति  
 जोर ॥ मनवेरीलावो गोर ॥ सुगुण मासतहे ॥ अरी





एकसार ॥ सेने सेने ॥ जगजग ॥ जगजग ॥ जगजग ॥  
 बोले जीमरेवेनीत ॥ मामाकीत नरीनीत ॥ पाशा  
 टालीप्रीत ॥ धन्य भगवंत हो ॥ १ ॥ धन्यावरी ए  
 खाण ॥ तन भन हरे प्राण ॥ गोत्रपुत्र सीनीत ॥ सम  
 रस सारखी कपट तो नजे नाहि ॥ हगकर प्रदेवांद  
 चीतवम्यो ओरमांति ॥ एसे हृष्टी नागकी ॥ हसक  
 तालीक्षेत ॥ रेकारो तुंकारो देत ॥ सदा तूमे र्हो चेत  
 देखीक्षेवो पारखी ॥ कहे कविजेत मृणो ॥ जेसो वा  
 तेसो बुणो सज्जनुमे जविजनो ॥ नारी नहीयागकी ॥ ६  
 आवत जावतदेख ॥ नरमनधारे छेप ॥ अथगुण लें  
 पेख ॥ दीलधारी तीनकुं ॥ कुसील न सेवो प्यारी ए  
 श्रीलज्या जासीथारी ॥ कुलरीत जास्यो हारी ॥ ठां  
 देतुंश्नकुं ॥ इम कहे प्राणपति ॥ निरमल धारोमति ।  
 कहे सज्ज जन सति ॥ धन्यवाद जीनकुं ॥ भनहीक  
 मनमांय ॥ जेसे कुपकेरी ठांय ॥ कजंवारंवार कांय ।  
 प्रीतरित कीनकुं ॥ ७ ॥ इसारा करतलवी ॥ हसक  
 रहेथोची ॥ जन सज्ज देखे तोवी ॥ नखरान ठोमती ।  
 ज्ञानकुं देखआतो ॥ रंगवण्यो रातोमातो ॥ देखे वीर



हरकी ॥ संध्याकी ते जोवेवाट ॥ बेगी जम्वावे हाट  
 जाटक वीसावे खाट ॥ श्रुध लेवे घरकी ॥ कहे प्राण  
 पती सुणो ॥ घण मान राखो घणो ॥ करीसऊ आपाप  
 ॥ मत जाणो परकी ॥ ऊ तो तोरी पगरज ॥ रऊ आठ  
 पोर सठज ॥ दीख्यासऊ नीरलज ॥ मुढ मति नरकी  
 ११ ॥ रुधि सिधि मेली आथ ॥ चांमनीको ठोकीसाथ  
 नीरोगी को जेसे काथ ॥ मनन चावतहे ॥ जोगी केरो  
 वेस पेहरयो ॥ नारीसैं तेहज करयो ॥ चाहे जवदधी  
 तरयो ॥ नारीनें चावतहे ॥ पडेजव फेरीतोत्री ॥ धरमी  
 नर होवे वोत्री ॥ देवाज्ञाको सुख वोतो ॥ सुरकण बतहे  
 ॥ कुमताको संघतज्यां ॥ प्रजु केरो नांम जज्यां ॥ हीरे  
 संतोपठज्यां ॥ शीवजे पावतहे ॥ १२ ॥ रुपिधती जोगी  
 जाण ॥ नारीकी ते राखेकाण ॥ जाणीरलाकी खाण ॥  
 तुमेकीती वातहो ॥ मोरेहारे तोरीहार ॥ एहीजग  
 व्यवहार ॥ तोने कऊं चारंवारे ॥ तुमे गोता खातहो ॥  
 चढचढ पम्पनीचे ॥ पीस तावो पडे पीठे ॥ कामामोव  
 चीत दीठे ॥ कायरकी जात हो ॥ सुणोकंत सत्यकथां  
 ॥ रेकारो तुं-कारो सव्यां, नरकेगे जेद लव्यां ॥ जग सो-



गरज सरीके चोली ॥ हाथ पल दे गो चोली ॥ ऊँतो नारी  
 जाती चोली ॥ जेद नोगे पायोहे ॥ १६ ॥ जे गरीनो प्रीती  
 करे ॥ खाविंदसे नाही करे ॥ ह्मदग पाय परे ॥ माया  
 कीते पेटीहे ॥ नग्देखी राजी होवे ॥ फीर गुल सांसी  
 जोये ॥ ग्वीणह्सेचीनी रोवे ॥ मन आस मेटीहे ॥ ऊँतो  
 राखु तोरी आस ॥ मोनेमत देवोत्रास ॥ जाणो गुम  
 सोदास ॥ ममताकी चेटीहे ॥ जेतकहे मुणो वात ॥ १७  
 कुंकरेघात ॥ कुगती सेलीये जात ॥ शीवपुर ठंटीहे  
 १७ ॥ एकहीकी एसीवात ॥ कुनारीकु जात तात ॥  
 तेसज पीतामात ॥ जुनीवातां ओरकी ॥ जेसी सुणी  
 सीवणी ॥ याही मेवी चार घणी ॥ तेतो नारी नीरधणी  
 परीग्रह ठोरती ॥ कांमदेव केरीचेटी ॥ कपट मायाक  
 पेटी ॥ हीयेकोइ नरजेटी ॥ आलस ते मोरती ॥ न  
 सीखवंती नार ॥ सेव्या केइ व्यजासार ॥ एसोदेख्यो अ  
 णुहार ॥ फेटा प्रीती जोरती ॥ १८ ॥ जेसरधीतोही जा  
 ॥ फीरनही हातआत ॥ पीठेमन पीसतात ॥ नीज काज  
 जोव तो ॥ दीनसज वीतिगयो ॥ राते अंधकार जयो ॥  
 जांणे मुजकाज थयो ॥ सूइकोरो पोवतो ॥ जजन तो



नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥  
 नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥  
 नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥  
 नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥ नहि ॥  
 २२ ॥ गनते गनते गनते गनते गनते गनते गनते गनते ॥ न  
 जेनही जीनजांन ॥ नीरमन गनीरे ॥ गोमान मा  
 याजोन ॥ कर्ता न चरेगोन ॥ मन नही गयेगोन ॥  
 ममताते जाजहि ॥ नारीनेने श्रीगारी ॥ रुनेमर  
 घरवारी ॥ समते परीदारी ॥ पड्या कापार्जहि ॥ अं  
 तकाल आवेजव ॥ आगीर उकेळीनेन ॥ नागजाग  
 जनसव ॥ गोमीयाकी नार्जहि ॥ २३ ॥ गगन कीजे  
 तन्न ॥ नीरमल राखोमन ॥ न्यायगेती जोमोशन ॥  
 एहीजगरीतहे ॥ अनीती दुरेहीतजो ॥ नितीकेरो घर  
 ठजो ॥ निशिदीन प्रबुनजो ॥ साचीएही प्रीतहे ॥ पर  
 त्रीया संगप्यारे ॥ नजकर रहोन्यारे ॥ दीलमांहे  
 दयाधारे ॥ नरकु उठीतहे ॥ कामरस प्रेमरस ॥ जग  
 तनें कीनोवस ॥ धरमीनर कहेसव ॥ जगदी परीतहे ॥  
 २४ ॥ धमक धम्मक चाखे ॥ नरको वचनआखे ॥









ललचावे ॥ नवो धारे थाररे ॥ हस हसतां नाम  
 एसो सुख नही थारे ॥ दाघेपर खार मारे ॥ एस्  
 नाररे ॥ कांमी जन मोह वसे ॥ फूटा जाल मांहे प  
 ॥ आंख मीसी आगों धसे ॥ जेत तुं वीचाररे ॥  
 ढलको ते ढली जावे ॥ पीठे मन पीसतावे ॥ गइ  
 नही आवे ॥ नरां वात जांणीहे ॥ पांणी ते उतर ज  
 ॥ सन-मांन नही पावे ॥ सजा मांहे हांसी थावे ॥  
 दवी गमांणीहे ॥ फीट फीट होवे जद ॥ मन मांहे ल  
 जे हद ॥ जांणे अब मरूं कद ॥ एसे वज्र प्रांणीहे ॥ पे  
 तोले पीठे बोले ॥ तेह नर घण मोले ॥ गुंज वात हीये  
 तोले ॥ जेत केरी वांणि हे ॥ ३४ ॥ नमो श्रीहंतदेव ॥  
 सुर नर सारे सेव ॥ पुजो तुम नीत्य मेव सुखको एदा  
 ताहे ॥ राग द्वेष दुरे करी ॥ सुमत को दील धरी ॥ ज  
 जी को चीतधरी ॥ जेसे पुत्र माताहे ॥ सिधगती  
 वोई ॥ कपायको जीते सोई ॥ कर्म रज दुर खोई  
 शीवपुरी जाता हे ॥ पांचुं ज्ञान वोइ वरे ॥ शुक्ल ध्या  
 वोही धरे ॥ शुक्ल वेश्या वोहीकरे ॥ जेत सुख पाताहे  
 ३५ ॥ तमकार दुरे नासे ॥ समकीत रहे पासे ॥ मोद



श्री वीजयराग गुरी गान ॥ ३ ॥ नमो नमो सगरी गान  
 ॥ श्रीविजय मुनीनंद गुरीन ॥ तेहना गुण नंद वर  
 ॥ प्रजुकुं नांसी जीज ॥ ४ ॥ पास प्रजुना पमायवी  
 सरसे माग काज ॥ जवजल पार उतारजो ॥ रा  
 बांह ग्रहानी लाज ॥ ५ ॥ नंद हाटकी ॥ सरस्वति माता  
 संपती दाता ॥ अरज करुं करजोरु ॥ अहर समापो  
 बुधी आपो ॥ तोने सेवे ठे देवकीरोरु ॥ गणधर तुज  
 ध्यावे शरणं चीत द्यावे ते वीध करुं तेरी सेव ॥  
 सोभ वीयां भक्ते चोखे चीते ॥ ध्यावो श्रीगुरु देव ॥ १ ॥ ॥ आंकणी ॥

पंच माहावृत धारी विघ्न वीमारी ॥ श्रीविजय मु-  
 नीचंद्र सूरिस ॥ तपगठ नायक शुजगुण दायक ॥ तेहने  
 नांमु शीश ॥ अष्ट मदनें जीपे चंदज्युं दीपे ॥ तेहने  
 ध्यावो नीतसेव ॥ सो १ ॥ पंच संवर राखे अधीको  
 नही जाखे ॥ पाळे शुध आचार ॥ पंचसुम तीधारे कुम-  
 ति वारे ॥ करता देस वीहार ॥ जीन आणा पाळे दुपण  
 टाळे ॥ करता जीनपद सेव ॥ सो ॥ ३ ॥ पंच इंद्रियस  
 राखे मीथ्या नवी जाखे ॥ चाखे जीन रससार ॥ ब्रह्म-  
 चर्य जपाळे कषाय जटाळे ॥ बोळे वचन वीचार ॥ जीन



सूद ठठतो जाण ॥ पाट वेठा<sup>६१५</sup>वा पास प्रचुनें ॥ तेह  
 करया वखाण ॥ श्रीसंघे सामिल उसव कीनो ॥ केत  
 गुण कहेव ॥ सो० ॥ १० ॥ पाटण नगरमें पुज्य पधा  
 ॥ कीनी प्रतिष्ठा सार ॥ श्रीसंघ वेंचे आनंद वधाइ  
 वरत्या जय जय कार ॥ मगर-वाडेनो नाथठे तुमपेराज  
 ॥ साचो मांणि जद्रदेव ॥ सो० ॥ ११ ॥ मारवा<sup>६१६</sup>रुदेशं  
 पुज्य पधारो ॥ कजुंतुं शीश नमाय ॥ महिमां तोर  
 जगमां व्यापी ॥ वध्योठे सुजस सवाय ॥ गुजर देशेतोर  
 महिमा प्रगटी ॥ तुमे जग जश वास लहेव ॥ सो० ॥  
 ॥ १२ ॥ शीवांण<sup>६१७</sup>सी देसे गुरु उपदेसे ॥ यासे घणो उ  
 पकार ॥ वे कर जोमी वीनवुं तेथी ॥ त्यां तुमे करं  
 वीहार ॥ श्री सिंघ तरस्या गुरू दरिसणना ॥ करं  
 गुरू तोरी सेव ॥ सो० ॥ १३ ॥ अरज स्विकारो मेह  
 करीनें ॥ पुज्यजी श्री माहारोज ॥ आप पधार्या मो  
 आनंद उपजे ॥ सरसे सघळा काज एहवी अरजी क  
 रुतुं तुमनें ॥ वार वार नीत्यमे ॥ सो० ॥ १४ ॥ संक  
 ङुं अंक पीठांणो ॥ सागर वन्ही<sup>६१८</sup>द्वयो जीरु ॥ माहासु  
 दसमी दीन अरज करेठे ॥ जेतो वे कर जोरु ॥ एदे





पधारे पुज्यजी ॥ एहीन मोने नार ॥ ५ ॥ दमवी ॥  
 र्थकर सोनतो ॥ चैत्यनण्या वक्त नारी ॥ मीनत्र ना  
 दील मोहतो ॥ श्री गंवने सुगकारी ॥ ६ ॥ नाको  
 पार्श्व दीपतो ॥ मेवा भगमां जाण ॥ परत न देवदे ज  
 गतो ॥ सवल मनाइ आण ॥ ७ ॥ उन्ती पट वारी व  
 राजकृत वीनती संपुर्ण सं १९७९ का श्रावण सुद ३६  
 ॥ जेत सागर ॥

॥ अथ श्री भावद्रप गच्छके श्री पुज्यजी गाढाराज श्री श्री श्री १०८  
 श्री श्री जीन फत्तेन्द्र गुरीस्वर के गुणानुं वाद स्तुती प्रारंभे दुहा ॥

सरस्वती सांमण वीनवुं ॥ अरज करू चीतलाय ॥  
 गुरू तणी वीनर्ता करुं ॥ सुबुधी दे संमाय ॥ १ ॥ सुग-  
 रु सुधर्म आदरो ॥ कुगुरू कुदेवको ठंरु ॥ रिधिवृधि  
 रहजो सदा ॥ होज्यो धर्म अखंरु ॥ २ ॥ हे जवीयण  
 तुम सांजलो ॥ वीनय धरी चीत लाय ॥ श्री माताके  
 परतापसुं ॥ वीघज दुर पुलाय ॥ ३ ॥ माता मोपे मे-  
 हरकर ॥ संकट करजे दुर ॥ सुण होजे इश्वरी ॥ बुध-  
 दीजे नरपुर ॥ ४ ॥ गुणगीरू आंना गावसुं ॥ सुणजे  
 मात संमाय ॥ श्री संघको आणंद करो ॥ वीघज दुर  
 पलाय ॥ ५ ॥







( ७६ )

इ नही थाए ॥ कऊं तुं कर जोरुने ॥ राहै करी मा  
 उपर गुरुजी ॥ अष्ट कर्मकुं तोरुने ॥ अ० ॥ ३ ॥ तुम तो  
 गुरुजी नीर्मल सागर ॥ हुंतो महीनी जोरुने ॥ तुम तो  
 वीरहो न खसावे गुरुजी ॥ जीममही जल ठोरुने ॥ अ० ॥  
 ॥ ४ ॥ शीश मुगट सम प्यारा गुरुजी ॥ मस्तकनां जीम  
 मोरुने ॥ एहवाथे गुरुजी प्यारा मोनें ॥ कऊं तुं मान  
 मोरुने ॥ अ० ॥ ५ ॥ तुम जो नेहा तोमो ठो स्वामी ।  
 अण वीचारयो म तोरुने ॥ खांमीमो में देखो स्वांमी ।  
 ॥ तो तुमें दीजो ठोरुने ॥ अ० ॥ ६ ॥ अवमें गुरुजी शर  
 णां रोचाकर ॥ मत कोजो ओ रांकी होरुने ॥ शीष्य  
 अवगुण देखके स्वांमी ॥ तुरतही दीजे ठोरुने ॥ अ० ॥  
 ॥ ७ ॥ एती अरजी सुणके गुरुजी ॥ मतयो मुख म  
 कोरुने ॥ रत्न अमोलख आपने दीठा ॥ अव कैसे दे  
 ठोरुने ॥ ८ ॥ संवत चंद्र ग्रहकुं जाणो ॥ ठासठ केरी  
 जोरुने ॥ अरजी तुमपे कहं तुं स्वांमी ॥ पुरो वंठी  
 कोरुने ॥ अ० ॥ ९ ॥ इती गुरु वीनती समाप्त ॥

॥ अथ वीरजी स्तुती ॥

सकल संगल सुखदायक सदगुरु ॥ सुमती गुप्ती च



॥ १ ॥ जे जीन को जे जीन को जे जीन को जे जीन को जे जीन को  
जिने पावे ॥ १ ॥ जे जीन को जे जीन को जे जीन को जे जीन को जे जीन को ॥  
जे जीन को जे जीन को जे जीन को जे जीन को जे जीन को ॥ १ ॥

जीन प्रतिमां जीन मगीगी जागी ॥ नीणग आ  
गन मारगी ॥ जगवने तो नीणग हीनो ॥ गंगा को  
न राखीरे ॥ सु० ॥ १ ॥ पाद जगारे प्रीमा देगी ॥  
॥ लायो मय पैराग ॥ गान पीनाकं तांसी नीकम्यो ॥  
राजकुं दीनो लागरे ॥ सु० ॥ २ ॥ तांणांगेमें नार नीणग  
॥ बोदया श्री माहावीर ॥ नोया अंगे नोदया अतीसव ॥  
तुमे मनसां राखो भीर रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ झानाता अंगे द्रो-  
पदी पुजी ॥ जाणो सतर प्रकार ॥ जगवइ अंगे वीरा  
चारण ॥ नमन क्रीया करी सार रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ सातमे  
आठमे अंग संतालो ॥ शत्रुंजयनो अधीकार ॥ गीर-  
नार शीखरजी सवही बोले ॥ केइ तखा नरनारे  
॥ सु० ॥ ५ ॥ प्रश्न व्याकरणें हंसा पाठे ॥ जीन पुजा न-  
ही वरजी ॥ इस जांणी तुम जक्की करो शुच ॥ द्रव्य  
जावको सरजीरे ॥ सु० ॥ ६ ॥ उवाइ उपांगे नगरी वरणी ॥  
जीन मंदरसुं सोजे ॥ इस अनेक जाव सृणो तुम ॥ मत





वज्रल वधावेरे ॥ सू० ॥ १५ ॥ पाठ चोरणो फूठ वा  
 लणो ॥ ईणसें व्रत जो दुजो जागे ॥ आंटावेसी दुसे-  
 लनें ॥ अर्थ कहो तुम सागेरे ॥ सु० ॥ १६ ॥ अर्थ  
 उथापो आपसत थापो ॥ एह नही मुनी आचार ॥ पांन  
 माहाव्रत नीश्वे जागे ॥ जद आश्रव लागे लाररे ॥ सु०  
 ॥ १६ ॥ पंक्ति तेही कही जे साचा ॥ ग्यांन क्रीया  
 दातार ॥ फूठमांहे ते पाप वतावे ॥ बोले वचन बीचार  
 रे ॥ सू० ॥ १७ ॥ इसही आगम बोले ठे तो ॥ सान  
 मांन जो एह ॥ राग द्वेषको कांम नही ठे ॥ मीठामी  
 दुकरु तेहरे ॥ सू० ॥ १८ ॥ संवत उगणीसे वरस ती-  
 उनरे ॥ सुहदे माघज मास ॥ अष्टमीके दीन जोम  
 वणाई ॥ पुरो प्रभुजी आसरे ॥ सू० ॥ १९ ॥ सेर वाजो  
 नगे दीपनो सने ॥ श्रावके सजा वणाइ ॥ चोय मुनी  
 न नरचा करके ॥ प्रगट लावणी गाइरे ॥ सू० ॥ २० ॥  
 गीतजनार्थजीतणेमु प्रासादे ॥ सेरवा लोत्रा मांढी  
 मांढीनटकी आग्यालेके ॥ जेते मसल रचाइरे ॥ सु०  
 ॥ २१ ॥ छी श्री चोयमलकी की लावणी समात ॥



॥ ५७ ॥ सिंह पथरको देह बण्यो ॥ बंठो दीसे जोध ॥ मांणस  
को ते मारे नही ॥ कांहां गयो वो क्रोध ॥ १ ॥ एसी चतुराड केल्यो  
वात बणाइ हठ ॥ जेते मनमां धारके ॥ मुनीमु बोल्यो जड ॥ २ ॥  
सिंघ नारकी थापना ॥ तेनो नाम कहो बतलाय ॥ तेमां चेतन पण  
नही ॥ कीमते सिंह कहवाय ॥ ३ ॥ पशुनी थापना मांणी तुमे  
जीनजीकी मानो नांय ॥ तीण सुवेर थाके ऊओ कडे ॥ सो संव  
नाम बताय ॥ ४ ॥ कमट्टा मुरनां केड हो ॥ के गौसालाना पुत्र  
कीम उथापो जीन राजने ॥ इम नही बाजो सपुत ॥ ५ ॥



ओर न आवे कांम ॥ थारी मारी संग नही चले ॥ पछे हीवडेसी  
 हांम ॥ २ ॥ मेंतो वात सवी सरदऊं ॥ नही भाखुं एकंत ॥ दांन सीन  
 तप भावना ॥ ए चारामें नही भ्रांत ॥ ३ ॥ स्याद वाद मत जीन रा-  
 जनो ॥ सो सत्य विचारी जोय ॥ मिथ्या वचन परूपतां ॥ प्रांणी ते  
 परभव दुखीयो होय ॥ ४ ॥ तव ऋषिजी प्रकासीया ॥ मुणजो सा-  
 वध वात ॥ प्रांणी फुल चढावतां ॥ जीवानी होवे घात ॥ ५ ॥ धुंष  
 दीपनैवद्य करो ॥ फीर पुजो नव अग ॥ प्रभुनी ग्रंथी ते कीम करे ॥  
 सावच्च कामनो संग ॥ ६ ॥ प्रभुजी मुक्त पधारीया ॥ ते नांम स्यो  
 नीरधार ॥ तेह भावगुं समरण करो ॥ ज्युं उतरे वेडा पार ॥ ७ ॥ इतनी  
 वात जेते सुणी ॥ मनमां समज्यो जेह ॥ इणे तो मत ए पकड लीयो  
 ॥ तांणत नावे छेह ॥ ८ ॥ तव जेतो मुनीको कहे ॥ मुणजो थे मुनी-  
 राज ॥ हिंस्यामें धर्म परूपीयो ॥ इसडो कऊं इलाज ॥ ९ ॥

॥ ढाल ३ जी देशी चोपाइनी ॥ साधु देशमें करे वीहार ॥  
 गमन करीनें लावे आहार ॥ इर्या पालत त्रस जीव हणाय ॥ तेमां पीण  
 कीम धरम कहवाय ॥ १ ॥ वरसत मेहमें स्थंडल जाय ॥ नेरिंद्री तेरिंद्री  
 जीव हणाय ॥ नदी उतरतां पापज थाय ॥ धीमे धीमे उपाडे पाय ॥ २ ॥  
 आर्या नदीमें तणाती जाय ॥ साधु देखतही नीकाले आय ॥ तीणमें  
 धर्म पीण कह्यो जीनराय ॥ जीवतो तेमां असंख्य हणाय ॥ ३ ॥ उमह  
 जीन प्रतिमां पुजाय ॥ तेमां समकीत गाढो थाय ॥ सावच्च कांम तुमें  
 नाम वताय ॥ भोला लोकानें तुं मत भरमाव ॥ ४ ॥ भक्ष अभक्षन  
 करो वीचार ॥ कृत्य अकृत्यने ल्यो मनधार ॥ आपापक्ष  
 छोडो मती ॥ तो याजो साचा समकीती ॥ ५ ॥ घरमें आन



तो खरचत द्रव्य अपार ॥ २ ॥ भाव वंदन मेतो सरदही ॥ द्रव्य  
माने नाय ॥ ए हंचा कांममे सरदहो ॥ तामे धर्मज नांय ॥ ३ ॥ इ  
वात मुनीराज कही ॥ तव जेतो वोल्हो आय ॥ अठ वातको भा  
तां ॥ थारो समकीत एलो जाय ॥ ४ ॥ मुनी तो सावद्य त्यागीयो  
तीमहीवे श्रावक जांण ॥ तीणमुं पुजा नवी करे ॥ पीण वांदण रं  
कीयो परीमांण ॥ ५ ॥ अरीहंत प्रतीमां जीन चैत्यवीण ॥ अवर की  
पच्छखांण ॥ मुगुरु मुदेवने वांदतां ॥ मनमां समकीत आंण ॥ ६ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ देशी ॥ नणदलरी ॥ जेतो कहे तुमे मां  
लो ॥ मनमां मुधबुध जाणहो ॥ मुनीजन ॥ साधुजी पुजा कीम कां  
सावद्यना कीया पच्छखांणहो ॥ मु० जेतो कहे तुमे मांभलो ॥ श्रा  
दम तेवीरनां ॥ पडीमा धारी जाणहो ॥ मु० ॥ तीणेतो समकीत उतरयो  
नवही कीयो प्रमाण हो ॥ मु० जे ॥ २ ॥ अन्य देव वंदु नही ॥ इंदु भी  
चैत्यहो ॥ मु० ॥ मीश्यान्नी चैत्ये जीन मुरती ॥ ते नही वंदण जोग  
॥ मु० जे ॥ ३ ॥ वंदनमे दोषतो कोउनही ॥ पीण व्याहार भा  
फोर हो ॥ मु० ॥ जीम श्रुत्या वामे रत्ना केवली ॥ नही वंदे मुग  
ओहो ॥ मु० जे ॥ ४ ॥ तीमही व्यवहारने ओळखतो ॥ तीम  
वीर माहो भाय हो ॥ मु० ॥ वंदण पुजण कीरवना ॥ पढही  
॥ मु० जे ॥ ५ ॥ चोपीगनांम पाठ छे ॥ वंदीय पति  
॥ मु० जे ॥ ६ ॥ कः कःवे अनु मोदवे ॥ तेहनो मरीपा कळ  
॥ मु० जे ॥ ७ ॥ सावद्यनां काम प्रवृत्तगीया ॥ न  
॥ मु० जे ॥ ८ ॥ चार नीपया प्रवृत्तगीया ॥ न  
॥ मु० जे ॥ ९ ॥ द्रव्य भाव नाम थापना ॥ मु०





तांणमें थाए धरम कावरोरे ॥ एम नही वाजो सुपात ॥ ए० म० ॥  
 मीथ्या ते समकीत नहीं रे ॥ व्रतकुं पोछे घात ॥ व्र० म० ॥ जेन धर्म  
 ति उजलोरे ॥ मेलो नही तीलमात ॥ मे० म० ॥ १ ॥ जीन प्रत  
 जीन सारीपीरे ॥ इसडी कहो तुमे वात ॥ इ० म० ॥ साचेंमे सम  
 वसेरे ॥ व्रतनी वेल वधजात ॥ व्र० म० ॥ ३ ॥ पचा पचीमें  
 मेरेरे ॥ ते तो मुठ गीमार ॥ ते० म० ॥ जीहां नांम तीहां थापनरि  
 जांणे सयल संसार ॥ जां० म० ॥ ४ ॥ जेहको समरण कर रवारें ॥ ते  
 नंदो केम ॥ ते० म० ॥ जीनालय सूत्रे भण्यारे ॥ तुमही मानो एम  
 तु० म० ॥ ५ ॥ श्री वीजयमृनीचंद्रसूरी स्वरूपे ॥ तास पसाए ज  
 ॥ ता० म० ॥ जेतो समकीत उछरे रे ॥ सूत्रनो वचन प्रम  
 ॥ सु० म० ॥ ६ ॥

॥ दुहा ॥ समकीतसुं मुक्ती मीले ॥ इम भाख्यो जीनराज ॥  
 मुहरत जेणे फरसीयो ॥ तेहना सीजे काज ॥ १ ॥ इम जांणी श्रोता  
 सुणो ॥ आलश अलगो मेल ॥ थारी मारी अव मत कगे ॥ साजो मा  
 शेल ॥ २ ॥ मार्ग केड प्रकारनां तेहना केड वीचार ॥ पीण सुध मार  
 जीन राजनां ॥ तेहने ल्यो मन धार ॥ ३ ॥ कुलयुग आरे पांचमे ॥  
 पाखंडी लोग ॥ अपणो पंथ जमायके ॥ फीर साधण लागा जोग ॥  
 पीण तेहमां जे गुण होवे ॥ एक एक प्रधान ॥ तेहना गुण हवे सांभलो  
 श्रोता थड मावधान ॥ ५ ॥

॥ ढाल ६ छी ॥ राग धन्यासी सींधुर ॥ शत्रुंजय उ  
 नांनलो ॥ ग० देशी ॥ जेन धर्म अति दीपनो ॥ नीरमल गंग प्र  
 णोजी ॥ पीणमां मन पीण बह हुवा ॥ तेहनो मुणो अनुमानोती







धरी उवरी दत्त ॥१॥ च्यार अनुंतर नामे द्वार ॥ उच्चत अष्ट जोयण  
 विस्तार ॥ पंचसया धणु तीहां वेदीका ॥ लीजे सत्रि जोयण देविका  
 ॥ २ ॥ ए छ कुलगीरछे जंबु मजार ॥ सातभो मज्ज मेरु वनधार ॥  
 क्षेत्र बली सात तिहां आद्यंत ॥ भरत तणी सीमा हीमवंत ॥ ३ ॥ जे  
 भरतनुं जोयण परीमाण ॥ पांच छे छवीस छ कला जाण ॥ बीजा  
 क्षेत्रतणो अधीकार ॥ लेयो शास्त्र थकी मुविचार ॥४॥ दक्षग भरते  
 लंकानो देश ॥ नही रोरव बली नही कलेश ॥ अवर देश पण  
 परखीये ॥ एतो मणी सम लखी हरखीये ॥ ५ ॥ नगर एक  
 माहिंद्र पुर नांम ॥ चौहत चौरासी दीपे जाम ॥ व्यापरी त्यां  
 करे व्यापार ॥ वस्तु गीगतां नवी पांघु पार ॥ ६ ॥ खांड कोपरा  
 दाख निदाम ॥ लविंग जायफल मेवा जाण ॥ कीरीयाणानो नही  
 सेहन पार ॥ व्यापारी बेटा वाजार ॥ ७ ॥ नगर महेंद्र पुर मोटो जा-  
 ण ॥ दिपे जेहवो देव बीमान ॥ देव पुरी लाजे तीहां मरी ॥ महेंद्र  
 पुरनी देखी सबो रूअडी ॥८॥ गढमढ मिंदर पोल पगार ॥ जाली  
 गोख तणो नही पार ॥ देखे गुंदर अति रूअडी ॥ धरघर गोखे उभी  
 खडी ॥९॥ जाणे रंभा देव कुमार ॥ नव जोवनां भरते नार ॥ ओढी  
 रंग तणी चुनडी ॥ जाणे विधाता हाथे घडी ॥१०॥ एसो नगर महेंद्र  
 पुर जाण ॥ जैन धरमनी ते माने आण ॥ धर्मि नरते वसे सहुकोय ॥  
 धर्मथो शीवमुख निखे होय ॥११॥

॥ दुहा ॥ एसोइ धर्मि राजीयो ॥ महेंद्र चेन तस गांम ॥ न्याय-  
 वंत नृप सोभतो ॥ जाणो राजा रांम ॥१॥ प्रजा पालतो नीत रहे ॥  
 भोगवे भोग रसाल ॥ दो गंधक जीम मूखे रमे ॥ जाणे देवकुमार



ए ओलखासे सही कर तुम तणी जातडी ॥ हुइ पुत्री गुण राज ताह-  
 कुखमें ॥ सुणरांणी एहवी वांण पडी सायर दुखमें ॥ ४ ॥ रद  
 सुंदरी तव नार आंसु ढलकावती ॥ बोले गदगद साद मुखे विलख  
 वती ॥ सखीयां उभी पासके सहु समजावती ॥ मुखधरे अमृतनी  
 के मंगल गावती ॥ ५ ॥ क्युं रंग रांणी आपके कहो चातुर तुमे ।  
 पुत्रीनो मोटो कलंक के माइत कीम खमें ॥ प्रथम पुत्रीनो लाड को  
 माता घणो ॥ पछे पडे वीरह वियोगते तुमे सहीयां सुंणो ॥ ६ ॥  
 भर जोवनमें चिंता ते उपजे अति घणी ॥ वर जोवाने काज करे मे-  
 नत घणी ॥ परण्या पुठे निशदीन रहे धीया सासरे ॥ धीमे बोले  
 मुखवेंण पीउडानें आचरे ॥ ७ ॥ परण्या पीछे नाथके फीर माने  
 नहीं ॥ अथवा होय पतिहीनके चिंता ते सही ॥ कुख बंध्या जो होय तो  
 दुख बाधे घणुं ॥ तीण दुखथी हीयो कंपे सही रांणी तणुं ॥ ८ ॥ ए दुख  
 पुत्रीनां जाणके रांणी वीलखी थइ ॥ जोवो मात स्नेह तुमे सऊ रही रही  
 ॥ इम जांणी माया जाल धर्म हीये धारजो ॥ जेतो कहे सुखदाय  
 वचन हीये पालजो ॥ ९ ॥

॥ दुहा ॥ पुत्री जनमी तीण समे ॥ वाज्या ढोल नीसांण ॥  
 सुपड मोटो मंगाइने ॥ दाइ करे वीधान ॥ १ ॥ दासी दोडी मेलसुं ॥  
 आइ राजाके पास ॥ पुत्रीनी कहे वारता ॥ मुखसें थइय नीरास ॥ २ ॥  
 राजा मनमे हरखीयो ॥ दीधी वधाइ सार ॥ एक थइ मुज कुंवरी ॥  
 दोय कुंवर अवधार ॥ ३ ॥ मनमां ते राजी हुआ ॥ बीता दीनदस जांम  
 कुटुंबनें सहु संतोपीया ॥ घणां करी पकवान ॥ ४ ॥ न्याति गोत्र  
 जीमाईने ॥ राजा कहे सीरनांम ॥ मुझ कुले कुंवरी अवतरी ॥ देस





जो ॥ सोवन मुद्रा ओपे कुंवरीना कर मध्येरे लो ॥ हां० ॥ भणी गुणीने  
 थड् सर्व कलानी जाणजो ॥ अपमरने अणु हारे मुरनर मोवतीरे लो  
 ॥ हां॥ ७ ॥ दीन दीन वाधे चंद्र कला जीम वालजो ॥ आप स्वभावमें  
 रमती कुंवरी अंजनारे लो ॥ हां० ॥ जेत सागर कहे सांभलो वीजी  
 ढालजो ॥ जीन आंणा मुथ जांणी भवि तुमे पालजोरे लो ॥ हां० ॥ ८ ॥

॥ पुहा ॥ मुथ बुधि अध्यापके ॥ कुंवरी भणावी जेह ॥ मिथ्या  
 मत दुरे करे ॥ धर्म रागणी देह ॥ १ ॥ एकज सता विधिनय ॥ काल  
 व्रण गति चार ॥ अस्ति काय पांचे छप् ॥ द्रव्य सात नयधार ॥ २ ॥  
 आठ कर्म नवतत्त्व तीस ॥ दसवीथ मुनीवर धर्म ॥ पड्डीमा अग्यार  
 वार व्रत ॥ जाणे एहीज मर्म ॥ ३ ॥ मुलुतर कम्म पयडी ॥ दशत  
 अठावन ॥ कर्म हेतुना बंध पीण ॥ जाणे सतावन ॥ ४ ॥ बंधह उदय  
 उदीरण ॥ जाणे सतातेह ॥ मुहम वीचार सव्वे लहे ॥ प्रवचन  
 भाण्या जेह ॥ ५ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ इंर आंनलीरे ॥ इंर दारुम डाख ॥  
 ग देशी राग मलार ॥ सुंदर अंजनां सुंदरीरे ॥ जोवन पोढती  
 जोर ॥ भणी गुणी सगली कळारे ॥ चतुर पणे चीत चोर ॥ चतुर  
 नर जोयो कर्म विणेप ॥ कर्म लहीये कळि अणेप ॥ पुण्ये लहीये  
 मभुता पेय ॥ वारु पुण्य तणा फल देव ॥ च० ॥ जो ॥ २ ॥ रूपंत  
 गुणे आगळीरे ॥ विद्या प्रभुता सार ॥ मदना कारण छे सहरे ॥ पीण  
 मयन कर लीगार ॥ च० जो० ॥ ३ ॥ इक दीन अभ्यंतर मभारे ॥ वेढो  
 गय उद्धाम ॥ बोलावे गयजी नीज सुतारे ॥ माथे पाठक ताम ॥ च०  
 जो० ॥ ४ ॥ वीनय वनी नीज तातनेरे ॥ आवी कीध प्रणाम ॥ मंसीत



लरे ॥ चतुर नर ॥ विद्या धर ते राज वीरे लाल ॥ वीद्यामां भरपुर ॥  
 १ ॥ च० ॥ देश मनोहर लंकनारे लाल ॥ रावण अध चक्री जाणरे ॥  
 च० ॥ राजधी सऊ विद्या धररे लाल ॥ रावगनी मांनि आणरे ॥ च०  
 दे० ॥ २ ॥ ते ग्रहलाद नांमे राज नेरे लाल ॥ केतुमती रांणी जाणरे  
 ॥ च० संसार भोग ते भोगतारे लाल ॥ मुर सरीषा नर जाणरे ॥  
 च० दे० ॥ ३ ॥ इम वीचरंता रहं सदारे लाल ॥ सुखमें रांणी मही  
 पालरे ॥ च० इम करतां इक दीन रयेरे लाल ॥ रांणीनिं आयधानेरे  
 ॥ च० दे ॥ ४ ॥ केतुमतीनी कुखे उपनारे लाल ॥ जीवते एक  
 पुन्य वांनरे ॥ च० जेदीनधी सुख पामर्तारे लाल ॥ रांणी धरे शुभ  
 ध्यानरे ॥ च० दे ॥ ५ ॥ इम करतां दीन वही गयारे लाल ॥ पुरा  
 नव हुआ मासरे ॥ च० ॥ सात दीवस उपर थयारे लाल ॥ हवे पुरछे  
 मन तणी आसरे ॥ च० दे ॥ ६ ॥ पुत्रनो जनम थयो सुखरे लाल ॥  
 सुखे प्रसव्यो माय आपरे ॥ च० दे ॥ दाशी दीधी वधामणीरे लाल ॥  
 नासी गया सऊ पापरे ॥ च० दे ॥ ७ ॥ राजा मन हरयो घणुरे  
 लाल हरख्या रांणो रांणरे ॥ च० दे वाजा वाजे अती घणारे लाल ॥  
 ढोल थाल कंसालरे ॥ च० दे ॥ ८ ॥ जाचक आया पुकारतारे लाल  
 ॥ राजा देवे दांनरे ॥ च० दे ॥ नाटकीया नाटकरकरे लाल ॥ पावे  
 बहु सन मांनरे ॥ च० दे ॥ ९ ॥ इम करतां बहु भांत सुरे लाल ॥  
 नाना वीध उछरंगरे ॥ च० पंचम दीन नवरावतारे लाल ॥ नीर्मल  
 नीर ते गंगरे ॥ च० दे ॥ १० ॥ इम करतां दीन दस हुआरे लाल ॥  
 मनमां आंणी उमंगरे ॥ च० ॥ जेतो मुखसें इम वंदरे लाल ॥ दीनदीन  
 थाए उछरंगरे ॥ च० दे ॥ ११ ॥



लो ॥४॥ मीठी वांणीए इम बदेरे लो ॥ मामां वचन वीचार ॥ गळे  
 लपटी जतोरे लो ॥ जीम जीम हरजे मातजीरे लो ॥ कांड कोमल  
 वचन वणाय ॥ आडो करे मातसुंरे लो ॥५॥ बालक उपर मायनोरे  
 लो ॥ कांड हेज तणो नही पार ॥ काया जुदी जाणजोरे लो ॥ जी-  
 णरा मोटा भाग्य छे रे लो ॥ तीण घर एसा पुत ॥ दुजा सहु वांजी-  
 यारे लो ॥६॥ आदित्यपुर अति सोभतोरे लो ॥ कांड प्रह्लाद नाम  
 भूपाल ॥ तिणे कुले अवतरयोरे लो ॥ जननी जणे तो एसे जणेरे  
 लो ॥ कांड के दाताके मूर ॥ नही तो भली वांझणोरे लो ॥७॥ कुल  
 कपुत जणी करीरे लो ॥ कांड मतीरे गमावे नूर ॥ मुणो सहू नारी-  
 यारे लो ॥ पवनजी कुमार मोटा हुवारे लो ॥ कांड वरप पांचनां  
 जाण ॥ कला लघु केलवेरे लो ॥८॥ मात पीता तव नीरखतारे लो ॥  
 एतो करता बात विनोद ॥ विद्या हवे सीखवोरे लो ॥ तप गछनों ए  
 राजवीरे लो ॥ कांड विजय मुनीचंद्र मूरीस ॥ जेतानो शीर सेव-  
 रोरे लो ॥ ९ ॥

॥ दुहा ॥ वरस सातनो तव थयो ॥ पवनजी नामें कुमार ॥ मा-  
 ता कहे इणपर सही ॥ सुणो सजन परीवार ॥ १ ॥ कुमार नैसाले  
 भोकलो ॥ विद्या भणवा काज ॥ एह बात श्रवणे सूणी ॥ तव बोल्या  
 माहाराज ॥ २ ॥ माता बेरी जांणीये ॥ पीता जो शत्रु जाण ॥ विद्या  
 न पढावे बालने ॥ ते नर जाण अजाण ॥ ३ ॥ इम कही राजा सज थयो ॥  
 पुत्र भणावे सार ॥ विद्या भणवा भोकलो ॥ एहवो करयो वीचार ॥ ४ ॥  
 मुहरत चोखो देखाडीयो ॥ जोतपीयानें पास ॥ कुंवर भणी जसी  
 अती भलो ॥ हीवे पुर छे बंछीत आस ॥ ५ ॥



आदीत्य सेरमेंरे लो ॥ तिहां प्रहलाद नांम भूपालरे सु० मंत्री मनमां  
 चितवेरे लो ॥ १ ॥ रूपवंत अंजनां वालरे ॥ सु० सरीपो वर एहने  
 जोवसुरे लो ॥ पवनजी कुमार मुकुमाररे ॥ सु० मं॥२॥ इम चितवतो  
 मारग वहेरे लो ॥ पोहतो आदित्य सेररे ॥ सु० ॥ राय प्रहलादनें  
 भेटीयोरे लो ॥ धन्य धन्य मोटे भागरे ॥ सु० मं० ॥ ३ ॥ मणी मांगक  
 मोती हीरलारे लो ॥ भेट कीया तत खेवरे ॥ सु० ॥ राजा मन हर-  
 पीत हुवोरे लो ॥ जीम भोग मील्यांथी देवरे ॥ सु० मं० ॥ ४ ॥ जाय  
 उत्तारया मेलमेंरे ॥ ते सात भुवन आवासरे ॥ सु० ॥ आगत स्वागत  
 करे घणीरे लो ॥ भोजन भात स्यावासरे ॥ सु० मं० ॥ ५ ॥ दुजेदीन ते  
 रायजी रे लो ॥ वेठा सवातो जोडरे ॥ सु० ॥ मंत्री आयो तिहां मल  
 पतोरे ॥ अरज करे कर जोडरे ॥ सु० मं० ॥ ६ ॥ मंत्री कहे मुंणो राय  
 जीरेलो ॥ एकतो मुज अरदासरे ॥ सु० ॥ पेटी महिंद्र रायनीरे लो  
 अंजना नांम उदाररे ॥ सु० मं० ॥ ७ ॥ सोले वरसामें सा थदरे लो ॥  
 भर जोवनमां जाणरे ॥ सु० ॥ रूप लावण्य गुणे आगलीरे लो ॥ चतुर  
 वीसक्षण तेहरे ॥ सु० मं० ॥ ८ ॥ तेहनां सगपण कारणेरे लो ॥ हुं  
 आयो तुम पासरे ॥ सु० ॥ वचन नीर्वाहो हीवे माहरोरे लो ॥ सफल  
 हुवे मुझ आसरे ॥ सु० मं० ॥ ९ ॥ कुंवर पवनजी ताहरेरे लो ॥ वरप  
 पचीसमां जाणरे ॥ सु० ॥ तेहने देवां छे अंजनारे लो ॥ लग्न सहीकर  
 मानरे ॥ सु० मे० ॥ १० ॥ तपगल नायक सोभतोरे लो ॥ श्री विजय  
 मुनीचंद्र मरी रायरे ॥ सु० ॥ जेतो कहे ढाल आठमीरे लो ॥ सांभल्या  
 आणंद धायरे ॥ सु० मं० ॥ ११ ॥

॥ पुहा ॥ हेम जडीत मंडावीयो ॥ श्रीफल जांणो एक ॥ कुंवर





नार ॥ मनमां वीचारे पर भवेरे ॥ ए होजो मुझ भरतार ॥ सु० जो०  
 ॥ ९ ॥ इण प्रस्थांने चालतारे ॥ नगर महेद्र पुर जाय ॥ महेद्र भूपने  
 वधामणीरे ॥ वन पालक दीनी आय ॥ सु० जो० ॥ १० ॥ राय सुंणी  
 मन हरखीयोरे ॥ लीनां वधाइ जाय ॥ तोरण आया पवनजीरे ॥  
 देव्यांथी मृप थाय ॥ सु० जो० ॥ ११ ॥ गोरीयां गावे गीतडारे ॥  
 मंगल सुखनें काज ॥ सवरी आया पवनजीरे ॥ वरत्या जयजय कार ॥  
 ॥ सु० जो ॥ १२ ॥ तपगच्छ नायक राजतोरे ॥ श्री बीजे मुनीचंद्र सु-  
 रीक्ष ॥ तास पसाए जेतो बोलतारे ॥ दया सागरनो शीष्यरे ॥ सु०  
 जो० ॥ १३ ॥ नवमी ढाले हलकतीरे ॥ आइ सहीयां साथ ॥ अंजनां  
 मुंदरी तीण समेरे ॥ जोड्यो पवन सुं हाथ ॥ सु० जो ॥ १४ ॥

॥ छुहा ॥ करमे लावो जवरमुं ॥ जोसी करायो जाण ॥ कुमार  
 मन भीनो नही ॥ पुरय पुन्य प्रमाण ॥ १ ॥ हरखन आयो एरुने ॥  
 नरो उपनो नली गोग ॥ अतराय हुट्टी नही ॥ कीम वीलछे ए भांग  
 ॥ २ ॥ पीण न्यस्तार नेणे कर्षो ॥ फेरा फरीया चार ॥ हल्ल लेतानो  
 टांनरे ॥ रागजी फरी वीचार ॥ ३ ॥ जोशी मांगे दक्षणा ॥ जीम राज  
 पीयाही गीत ॥ चोवो मंगल वरनीयो ॥ गोरयां गावे गीत ॥ ४ ॥  
 नर दया पाणीक टल्या ॥ दृग पेडा मन आया ॥ अंजना पवन प  
 दपरी ॥ नदरी मेढले जाय ॥ ५ ॥ गिज्यापे पेडा पवनजी ॥ रक्षा भरी  
 मृग दान ॥ अजना आइ गकती ॥ मुखेन बोले बोल ॥ ६ ॥ नरी पकडा  
 मृग दान ॥ नरी वीजरी वात ॥ मुखेन पृष्ठे दंपनी ॥ उमरी गपाड  
 मृग दान ॥ नरी वीजरी वात ॥ आया केरे जाण ॥ ७ ॥  
 नरी वीजरी वात ॥ पवनजी बागे जाण ॥ ८ ॥ जान चाक्री बादी



बहु सीख ॥ वा० ॥ ११ ॥ तप गन्धनो श्रीर मोरारे हां ॥ श्री नीजं-  
मुनी चंद्र मुरीस ॥ वा० ॥ ढाल दसमी जेतो कहेरे हां ॥ दया साग-  
रनो शीष्य ॥ वा० ॥ ११ ॥

॥ दुहा ॥ मात पीता पाय लागने ॥ कुंवरी नली पीयू राग ॥  
हय गय रथ सऊ सुं पिने ॥ बोलावे नर नाथ ॥ १ ॥ ए मंदीर ए मा-  
लीया ॥ नगरी आही ठाण ॥ मुझनें बीसरसो नही ॥ रात दीवस  
सुममाण ॥ २ ॥ सीख करी सवी लोकसुं नयणे निंद प्रवाह ॥ हीयडो  
फाटे मायनो ॥ उलट्यो वीरह अथाह ॥ २ ॥ गले लागो पुत्री तणे ॥  
माय करे आक्रंद ॥ प्रेम तणे परवस थड ॥ हे है मोह नरिंद ॥ ४ ॥  
आंसु कुवरी लोयणे ॥ जल धर जीम संजोय ॥ हथेलि छाला पड्या ॥  
चीर नीचोय नीचोय ॥ ५ ॥ रोतां मृग रोवावीया ॥ बांट बटाउ  
लोक ॥ जातां जीव बहे नही ॥ बीछडवानो सोक ॥ ६ ॥ कुंवरी चाली  
सासरे ॥ हील मील सीख करेह ॥ फरीफरी पाछो जोवती ॥ डवडर  
नयण भरेह ॥ ७ ॥

॥ ढाल ११ मी ॥ वे कोइ आण मीलावे सजना ॥ ए  
देशी ॥ हो नृप चाल्यो तीहांथी पवनजी ॥ आदीत्य पुरनी वाटहोहो  
नृप नयण न मेले नार थी ॥ १ ॥ हो साथी संग रहे ॥ वात करे  
दीनरातहो ॥ हो० नृप० ॥ १ ॥ हो केइक दीननें आंतरे ॥ पोहतो  
आदीत्य सेरहो ॥ हो० नृप० ॥ देपी जन सहु हरखीया ॥ एतो देखी  
वरातनो घेरहो ॥ हो० नृप० ॥ २ ॥ हो रायनें खबर देरावता ॥ एतो  
राज सांभेलानो काज हो खबर हुई महलादने कयों सामैयानो साज हो ॥  
हो० नृप० ॥ ३ ॥ हो गीत गावे साहेलीयां दंपतीने लीया वधाय हो ॥ हो० ॥



दुत कहे सुण राजवी ॥ वरुणनी जेन्या जाण ॥ ते आड लंक लुंशना ॥  
 तीणसुं करो प्रयाण ॥५॥ इम मुणीनें पवनजी ॥ थयां प्रयाणे काज ॥  
 मात पीता सुं जइ मीलया ॥ जामु लंका आज ॥ ६ ॥ नारीनी खवर  
 तो नवि करी ॥ नही पुछी कोइ बात ॥ पोण अंजनां पीयुनें रट रही ॥  
 ज्युं चंदानें रात ॥ ७ ॥

॥ ढाल १२ मी ॥ विमल जीन सारे तुम सुं प्रेम ॥  
 ए देशी ॥ पवन तीहांथी चालीयोजी ॥ सैन्य सजी बलवान ॥ जाय  
 जी तुं हवे वरुणने जी ॥ भलो करे भगवानहे ॥ मातां विघ्न तो कीजे  
 दुर ॥१॥ आकास गांमनी चिया सजी जी ॥ आकाश मार्गे जाय ॥  
 सबल सूर जुंजारने जी ॥ देखी कुमार हरपाय हे ॥ मा० ॥२॥ मोरग  
 जातां सैन्यनें जी ॥ आथमीयो तव भांण ॥ सरोवर देखी रूअडोजी ॥  
 तीहां दीना तंबु तांणहे ॥ मा० ॥३॥ रात पडी दीन आथम्योजी ॥  
 ॥ सुता सब जुंजार ॥ तीण वक्ते कोतीक वणेजी ॥ तेहनो कहूं अधी-  
 कार हे ॥ मा० ॥४॥ सरोवर उपर वृक्ष छे जी ॥ आम्रनो एक प्रधान  
 तीहां वेठाते पनवजी ॥ वेठा आणन्द लाय ॥ चकवी वीरह वीयोगथी  
 जी ॥ दीन वचन गील लायहे ॥ मा० ॥६॥ प्रीतम कीम ए वीरह  
 पमाय ॥ हे रजनी दुरा मुखी जी ॥ ते दीयो वीरह वीयोग ॥ मुअ  
 हीयढे खटके घणुंजी ॥ जीम पेट मूलनो रोग हो ॥ प्री० ॥७॥ जीहां  
 रग रजनी रहे तवे जी ॥ प्रीतम रहे मारो दुर ॥ ए दुख मुअ साले  
 घणुंजी ॥ मोहनो दुख छे पुर हो ॥ प्री० ॥८॥ चकवीनां सुण बोल-  
 ढाजी ॥ कुमार वीचारे छे एम ॥ में छोडी मारी नीज प्रीयाजी ॥ ते  
 करती हसे कहो केमरे ॥ बंधव साच कहो मुझ आज ॥९॥ पशु पंखी









ताहरी सारहे ॥ सु० ते कीम देने मुद्रिका ॥ एतो अठो वोत वीचारहे ॥  
 सु० सा० ॥ १३ ॥ झूठा बोली तुं झठली ॥ मुद्रिकानो ले नांमहे ॥  
 सु० नवी घडाइ तें तो मुद्रिका ॥ ले तुं मुश सुत नांमहे ॥ सु० सा०  
 ॥ १४ ॥ इम कही गइ नीज मेलमें ॥ केतुमाति तव जाण हो ॥ सु०  
 वात कही सह रायनें ॥ मनमां क्रोध अती आणहो ॥ सुणो राजि  
 रांणी कहे पति सांभलो ॥ १५ ॥ कुल बहु थइ कुल खंपणी ॥  
 नही राखवा योगहो ॥ रांजीद ॥ कुलमें कपुत खटके घणा ॥ जीम  
 चक्षुनो रोगहो ॥ रा० रां० ॥ १६ ॥ एहनें पीहर मोकलो ॥ महे  
 नांमैं सेरहो ॥ रा० इहां रयांथी कुल लाजछे ॥ तीणमें रतीय न फेरह  
 ॥ रा० रां० ॥ १७ ॥ तवही राय महलादजी ॥ लायो रथ तव एक  
 हो ॥ सु० ॥ तीणमें वेछाडी अंजनां ॥ मनमां धरीय वीवेकहे ॥ सु०  
 नृपती कहे बहु सांभलो ॥ १८ ॥ तुमे तो जावो महेंद्र पुरे ॥ पीहर  
 वासमें आजहो ॥ सु० ॥ कुल खंपण कुलमें थइ ॥ आछी गमाइ मारी  
 लाजहे ॥ सु० नृ० ॥ १९ ॥ मुख ये मतिरे देखाव जो ॥ मत करजो  
 मोरी आसहे ॥ सु० देसवटो तुमे जाणनें ॥ रहजो पीहर वासहो ॥  
 सु० नृ० ॥ २० ॥ रथको तीहांथी हाकीयो ॥ वसंत तीलका जाणहो  
 सु० महेंद्र पुर जावा भणी ॥ कीधो तीहांथी प्रयाण हो ॥ सु० दासी-  
 कहे वाइ सांभलो ॥ २१ ॥ जासां सही महेंद्र पुरे ॥ करस्यां सुखे  
 वीश्रामहो ॥ सु० तीहां पुत्रने प्रसवो सुखे करी ॥ फीर भली करेगा  
 भगवानहे ॥ सु० दा० ॥ २२ ॥ तुरत गइ महेंद्र पुरे ॥ अंजनां सती  
 तीण वारहे ॥ सु० जाय मीली नीज मायनें ॥ वितक कयो विस्तारहो  
 ॥ सु० माता कहे धीया सांभलो ॥ २३ ॥ वणी वणी को सगो सहू ॥



॥ ढाख १४ मी ॥ वग्या शत्रु पाठ मोक्षनां एदेजी ॥  
 वसंत मालाने अजनां गयी ॥ मनमां कर्ती तीनाग ॥ चालो हो वनवा-  
 समां गयी ॥ नटीयो मय परी वारगे ॥ हो नही कां हावण हार रे  
 ॥ एतो झटो सब मसाररे ॥ धीम मोटी मोठ वीटणा ॥ १ ॥  
 चालो हो वनवागमां गयी ॥ गमरी जीननो नाम ॥ मानां गमण  
 एहळे सखी ॥ ओर नही आने कांगरे ॥ माने चाला श्री भगवानरे ॥  
 तेहनो साचो मोग जानरे ॥ धी० ॥ २ ॥ केहना छोर केहना नागहं  
 सखी ॥ केहनां मायने वाप जगमां कां केहनो नही गयी ॥ स्वार्थनी  
 सह्य वातरे ॥ मुझे नेणांमं नींद न आतरे ॥ हने दुख कसो नवी जातरे  
 ॥ धी० ॥ ३ ॥ हुं जाणती पीहर मांहेरो गयी ॥ मुखनो देवणहार ॥  
 एतो भया दुखनां डावला सखी ॥ नांणी दयातो लगार रे ॥ बलीया  
 पर देवे खाररे ॥ धृग झटो जगतनो प्याररे ॥ धी० ॥ ४ ॥ वाइ  
 सुणो दासी कहे सखी ॥ मती ना लगावो देर ॥ हुकम करो तो चालां  
 आगले सखि ॥ रथनें देवुं फेररे ॥ उहां नही कोइ पको सेररे ॥  
 एतो प्रगट्या पुणो सेररे ॥ धी० ॥ ५ ॥ अंजनां कहे दासी प्रते  
 सखी ॥ चालो हीवे वनवास ॥ सासरो पीहर सारिपा सखी ॥ छोडो  
 हवे एनी आसरे ॥ एतो जांणे कुटकानो काचरे ॥ एतो झटो मायानो  
 पासरे ॥ धी० ॥ ६ ॥ इम कही चाली वन मध्ये सखी ॥ सेरनें  
 सीरेरे वजार ॥ लोक सह्य हाहा करे सखी ॥ पुरजननो परीवाररे ॥  
 धृग राज कन्यानो अवताररे ॥ एहने नाव्यो कोइ वीचाररे ॥ धी०  
 ॥ ७ ॥ अंजनां सुण बोली थइ सखी ॥ मनमां सुमतां आण ॥ दोष  
 नही कोइ एहनो सखी ॥ मारा कर्म प्रमाणरे ॥ थास्ये मुझ लाजनी



जांणिरे ॥ हुं वारी लाल ॥ सुणज्यो करमनी वारता ॥ हुं ॥ १ ॥ जीव  
 दया गुण वेलडी ॥ हुं ॥ मत करो जीवनी घातरे ॥ हुं ॥ माया  
 कपटी जाणके ॥ हुं ॥ मत वोलो झुट लीगाररे ॥ हुं ॥ २ ॥ चोरी  
 पापनो मुलछे ॥ हुं ॥ मत करो पारकी आसरे ॥ हुं ॥ कुंभी नरकमें  
 पीलसे ॥ हुं ॥ परदारानें काजरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ३ ॥ परीग्रह मेल्युंछे  
 कारमो ॥ हुं ॥ कारमो सब परीवाररे ॥ हुं ॥ धन कंचन परीवारनें  
 ॥ हुं ॥ छोड चल्या पर लोकरे ॥ हुं ॥ ४ ॥ खीम्या खडग कर धा-  
 रज्यो ॥ हुं ॥ लै जीन वरनो नांमरे ॥ हुं ॥ करम पडे घणा पातला  
 ॥ हुं ॥ ते कीरीयाना, कहा नांमरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ५ ॥ हवे कहुं सम-  
 कीत लाभनो ॥ हुं ॥ सुणज्यो थइ सावधानरे ॥ हुं ॥ नास्ति भाषा  
 बोले नही ॥ हुं ॥ न करवो झुटो वादरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ६ ॥ अंजनां  
 सुण के वीनवे ॥ हुं ॥ कीण कीयो नास्तिक भावरे ॥ हुं ॥ ते कहो  
 मुझने वारता ॥ हुं ॥ मुनी कहे ग्यांन वीचाररे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ७ ॥  
 लोह उपलोहनी वारता ॥ हुं ॥ सुणज्यो थइ सावधानरे ॥ हुं ॥  
 राज ग्रही नगरी भली ॥ हुं ॥ लोह उपलोह नांमी सेठरे ॥ हुं ॥  
 सु० ॥ ८ ॥ विद्या भण्यां गुरु पासथी ॥ हुं ॥ नास्तिक सुरी गुरु  
 जांणरे ॥ हुं ॥ धर्म अधर्म पुन्य पापतो ॥ हुं ॥ जीव अजीव नही  
 कोयरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ९ ॥ पंच भुत वणी आत्मा ॥ हुं ॥ ओर सह  
 जंजालरे ॥ हुं ॥ इम भाषे नास्तिक मति ॥ हुं ॥ सरदहे लोह उप-  
 लोहरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ १० ॥ तीण समें राजग्रही नयरमें ॥ हुं ॥  
 आया गुणी जन साधुरे ॥ हुं ॥ प्रखदा गइ सह वांदवा ॥ हुं ॥ सु-  
 नी जव दीयो उपदेसरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ११ ॥ सुणी धर्म हरख्या सह



जांगिरे ॥ हुं वारी लाल ॥ सुणज्यो करमनी वारता ॥ हुं० ॥ १ ॥ जीव  
 दया गुण वेलडी ॥ हुं ॥ मत करो जीवनी घातरे ॥ हुं ॥ भाया  
 कपटी जाणके ॥ हुं ॥ मत वोलो झुट लीगाररे ॥ हुं० ॥ २ ॥ चोरी  
 पापनो मुलछे ॥ हुं ॥ मत करो पारकी आसरे ॥ हुं ॥ कुंभी नरकमें  
 पीलसे ॥ हुं ॥ परदारानें काजरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ३ ॥ परीग्रह मेल्युंछे  
 कारमो ॥ हुं ॥ कारमो सब परीवाररे ॥ हुं ॥ धन कंचन परीवारनें  
 ॥ हुं ॥ छोड चल्या पर लोकरे ॥ हुं० ॥ ४ ॥ खीम्या खडग कर धा-  
 रज्यो ॥ हुं ॥ लै जीन वरनो नांमरे ॥ हुं ॥ करम पडे घणा पातला  
 ॥ हुं ॥ ते कीरीयाना, कहा नांमरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ५ ॥ हवे कहूं सम-  
 कीत लाभनो ॥ हुं ॥ सुंणज्यो थइ सावधानरे ॥ हुं ॥ नास्ति भापा  
 बोले नही ॥ हुं ॥ न करवो झुटो वादरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ६ ॥ अंजनां  
 सुण के वीनवे ॥ हुं ॥ कीण कीयो नास्तिक भावरे ॥ हुं ॥ ते कहो  
 मुझने वारता ॥ हु ॥ मुनी कहे ग्यांन वीचाररे ॥ हु ॥ सु० ॥ ७ ॥  
 लोह उपलोहनी वारता ॥ हु ॥ सुंणज्यो थइ सावधानरे ॥ हु ॥  
 राज ग्रही नगरी भली ॥ हु ॥ लोह उपलोह नांमी सेठरे ॥ हु ॥  
 सु० ॥ ८ ॥ विद्या भण्यां गुरु पासथी ॥ हु ॥ नास्तिक सुरी गुरु  
 जाणरे ॥ हु ॥ धर्म अधर्म पुन्य पापतो ॥ हु ॥ जीव अजीव नही  
 कोयरे ॥ हु ॥ सु० ॥ ९ ॥ पंच भुत वणी आत्मा ॥ हु ॥ ओर सह  
 जंजालरे ॥ हु ॥ इम भाषे नास्तिक मति ॥ हु ॥ सरदहे लोह उप-  
 लोहरे ॥ हु ॥ सु० ॥ १० ॥ तीण समें राजग्रही नयरमें ॥ हु ॥  
 आया गुणी जन साधुरे ॥ हु ॥ प्रखदा गइ सह वांदवा ॥ हु ॥ मु-  
 नी जव दीयो उपदेसरे ॥ हु ॥ सु० ॥ ११ ॥ सुंणी धर्म हरख्या सह





जांणिरे ॥ हुं वारी लाल ॥ सुणज्यो करमनी वारता ॥ हुं० ॥ १ ॥ जीव  
 दया गुण वेलडी ॥ हुं ॥ मत करो जीवनी घातरे ॥ हुं ॥ माया  
 कपटी जाणके ॥ हुं ॥ मत बोलो झुट लीगाररे ॥ हुं० ॥ २ ॥ चोरी  
 पापनो मुलछे ॥ हुं ॥ मत करो पारकी आसरे ॥ हुं ॥ कुंभी नरकमें  
 पीलसे ॥ हुं ॥ परदारानें काजरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ३ ॥ परीग्रह मेल्युंछे  
 कारमो ॥ हुं ॥ कारमो सब परीवाररे ॥ हुं ॥ धन कंचन परीवारनं  
 ॥ हुं ॥ छोड चल्या पर लोकरे ॥ हुं० ॥ ४ ॥ खीम्या खडग कर धा-  
 रज्यो ॥ हुं ॥ लै जीन वरनो नामरे ॥ हुं ॥ करम पडे घणा पातला  
 ॥ हुं ॥ ते कीरीयाना कढा नामरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ५ ॥ हवे कहूं सम-  
 कीत लाभनो ॥ हुं ॥ सुणज्यो थइ सावधानरे ॥ हुं ॥ नास्ति भाषा  
 बोले नही ॥ हुं ॥ न करवो झुठो वादरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ६ ॥ अंजनां  
 सुण के वीनवे ॥ हुं ॥ कीण कीयो नास्तिक भावरे ॥ हुं ॥ ते कहो  
 मुझने वारता ॥ हु ॥ सुनी कहे ग्यांन वीचाररे ॥ हु ॥ सु० ॥ ७ ॥  
 लोह उपलोहनी वारता ॥ हु ॥ सुणज्यो थइ सावधानरे ॥ हु ॥  
 राज ग्रही नगरी भली ॥ हु ॥ लोह उपलोह नामी सेठरे ॥ हु ॥  
 सु० ॥ ८ ॥ विद्या भण्यां गुरु पासथी ॥ हु ॥ नास्तिक सुरी गुरु  
 जांणरे ॥ हु ॥ धर्म अधर्म पुन्य पापतो ॥ हु ॥ जीव अजीव नही  
 कोयरे ॥ हु ॥ सु० ॥ ९ ॥ पंच भुत वणी आत्मा ॥ हु ॥ ओर सह  
 जंजालरे ॥ हु ॥ इम भाषे नास्तिक मति ॥ हु ॥ सरदहे लोह उप-  
 लोहरे ॥ हु ॥ सु० ॥ १० ॥ तीण समें राजग्रही नयरमें ॥ हु ॥  
 आया गुणी जन साधुरे ॥ हु ॥ प्रखदा गइ सह वांदवा ॥ हु ॥ सु-  
 नीजव दीयो उपदेसरे ॥ हु ॥ सु० ॥ ११ ॥ सुणी धर्म हरख्या सह



जांणिरे ॥ हुं वारी लाल ॥ सुणज्यो करमनी वारता ॥ हुं० ॥ १ ॥ जीव  
 दया गुण वेलडी ॥ हुं ॥ मत करो जीवनी घातरे ॥ हुं ॥ भायां  
 कपटी जाणके ॥ हुं ॥ मत वोलो झुट लीगाररे ॥ हुं० ॥ २ ॥ चोरी  
 पापनो सुलछे ॥ हुं ॥ मत करो पारकी आसरे ॥ हुं ॥ कुंभी नरकमें  
 पीलसे ॥ हुं ॥ परदारानें काजरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ३ ॥ परीग्रह मेल्युंछे  
 कारमो ॥ हुं ॥ कारमो सब परीवाररे ॥ हुं ॥ धन कंचन परीवारनें  
 ॥ हुं ॥ छोड चल्या पर लोकरे ॥ हुं० ॥ ४ ॥ खीम्या खडग कर धा-  
 रज्यो ॥ हुं ॥ लै जीन वरनो नांमरे ॥ हुं ॥ करम पडे घणा पातला  
 ॥ हुं ॥ ते कीरीयाना कया नांमरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ५ ॥ हवे कहूं सम-  
 कीत लाभनो ॥ हुं ॥ सुणज्यो थड सावधानरे ॥ हुं ॥ नास्ति भापा  
 वोले नही ॥ हुं ॥ न करवो झुठो वादरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ६ ॥ अंजनां  
 सुण के वीनवे ॥ हुं ॥ कीण कीयो नास्तिक भावरे ॥ हुं ॥ ते कहो  
 मुझने वारता ॥ हु ॥ मुनी कहे ग्यांन वीचाररे ॥ हु ॥ सु० ॥ ७ ॥  
 लोह उपलोहनी वारता ॥ हु ॥ सुणज्यो थड सावधानरे ॥ हु ॥  
 राज ग्रही नगरी भली ॥ हु ॥ लोह उपलोह नांमी सेठरे ॥ हु ॥  
 सु० ॥ ८ ॥ विद्या भण्यां गुरु पासथी ॥ हु ॥ नास्तिक सुरी गुरु  
 जांणरे ॥ हु ॥ धर्म अधर्म पुन्य पापतो ॥ हु ॥ जीव अजीव नही  
 कोयरे ॥ हु ॥ सु० ॥ ९ ॥ पंच भुत वणी आत्मा ॥ हु ॥ ओर सह  
 जंजालरे ॥ हु ॥ इम भापे नास्तिक मति ॥ हु ॥ सरदहे लोह उप-  
 लोहरे ॥ हु ॥ सु० ॥ १० ॥ तीण समें राजग्रही नयरमें ॥ हु ॥  
 आया गुणी जन साधुरे ॥ हु ॥ प्रखदा गइ सह वांदवा ॥ हु ॥ मु-  
 नी जव दीयो उपदेसरे ॥ हु ॥ सु० ॥ ११ ॥ सुंणी धर्म हररुया सह



जांणिरे ॥ हुं वारी लाल ॥ सुणज्यो करमनी वारता ॥ हुं० ॥ १ ॥ जीव  
 दया गुण चेलडी ॥ हुं ॥ मत करो जीवनी घातरे ॥ हुं ॥ माया  
 कपटी जाणके ॥ हुं ॥ मत वोलो झुट लीगाररे ॥ हुं० ॥ २ ॥ चोरी  
 पापनो मुलछे ॥ हुं ॥ मत करो पारकी आसरे ॥ हुं ॥ कुंभी नरकमें  
 पीलसे ॥ हुं ॥ परदारानें काजरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ३ ॥ परीग्रह मेल्युंछे  
 कारमो ॥ हुं ॥ कारमो सब परीवाररे ॥ हुं ॥ धन कंचन परीवारनें  
 ॥ हुं ॥ छोड चल्या पर लोकरे ॥ हुं० ॥ ४ ॥ खीम्या खडग कर धा-  
 रज्यो ॥ हुं ॥ लै जीन वरनो नांमरे ॥ हुं ॥ करम पडे घणा पातला  
 ॥ हुं ॥ ते कीरीयाना कथा नांमरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ५ ॥ हवे कहुं सम-  
 कीत लाभनो ॥ हुं ॥ सुंणज्यो थइ सावधानरे ॥ हुं ॥ नास्ति भाषा  
 बोले नही ॥ हुं ॥ न करवो झुटो वादरे ॥ हुं ॥ सु० ॥ ६ ॥ अंजनां  
 सुण के बीनवे ॥ हुं ॥ कीण कीयो नास्तिक भावरे ॥ हुं ॥ ते कहो  
 मुझने वारता ॥ हु ॥ मुनी कहे ग्यांन वीचाररे ॥ हु ॥ सु० ॥ ७ ॥  
 लोह उपलोहनी वारता ॥ हु ॥ सुंणज्यो थइ सावधानरे ॥ हु ॥  
 राज ग्रही नगरी भली ॥ हु ॥ लोह उपलोह नांमी सेठरे ॥ हु ॥  
 सु० ॥ ८ ॥ विद्या भण्यां गुरु पासथी ॥ हु ॥ नास्तिक सुरी गुरु  
 जाणरे ॥ हु ॥ धर्म अधर्म पुन्य पापतो ॥ हु ॥ जीव अजीव नही  
 कोयरे ॥ हु ॥ सु० ॥ ९ ॥ पंच भुत वणी आत्मा ॥ हु ॥ ओर सह  
 जंजालरे ॥ हु ॥ इम भापे नास्तिक मति ॥ हु ॥ सरदहे लोह उप-  
 लोहरे ॥ हु ॥ सु० ॥ १० ॥ तीण समें राजग्रही नयरमें ॥ हु ॥  
 आया गुणी जन साधुरे ॥ हु ॥ प्रखदा गइ सह वांदवा ॥ हु ॥ मु-  
 नी जव दीयो उपदेसरे ॥ हु ॥ सु० ॥ ११ ॥ सुंणी धर्म हरल्या सह



॥ दुहा ॥ मुनी जीन कहे मुण अंजनां ॥ इम जांणी मीथ्यात ॥  
 कुंण वोले नास्तिक विनां ॥ झूठ तणा अवदात ॥ १ ॥ झूठ हरावे  
 जग तमें ॥ झूठ नरक लै जात ॥ झूठो माया केलवे ॥ झूठो करे जीव-  
 घात ॥ २ ॥ इम दीधी मुनी देशनां ॥ श्रवण करी चीत लाया वसंत  
 माला तव वीनवे ॥ मुणो मुनीश्वर राय ॥ ३ ॥ अंजनां सुंदरी मुज  
 प्रीया ॥ तेहनो कहो अवदात ॥ कर्म करयो मुं पूर्वे ॥ भवनी कहो  
 तुमवात ॥ ४ ॥ मुनी कहे मुणजो वारता ॥ पुर्व भवनी जाण ॥ वसत  
 माला कहे सत्यछे भापो कृपा नीधान ॥ ५ ॥

॥ ढाल १५ मी ॥ वीर सुणो सोरी वीनती ए देशी ॥  
 मुनी कहे देव लोकथी ॥ चवी प्रगळ्यो हो प्रांणी पुन्यवान ॥ ए भव मोक्ष  
 सीघावसी ॥ धन्य अंजनां हो रत्नांरी खाण ॥ जोवो कर्म गती इसी ॥  
 १ ॥ कर्म गती सऊ दुख सद्यां ॥ पुर्व भवनो हो मुंजो अवदात ॥  
 राजाने दोय रांणी हुती ॥ तेहनी हो हवे कहुलुं वात ॥ जो० ॥ २  
 ॥ सोरापुर पट्टण मांहीन ॥ तीहां राजाहो कनकरथ नांम ॥ तेहने  
 रांणी दोय थट ॥ मांहो मांहे हो नही संपनो कांम ॥ जो० ॥ ३ ॥ ते-  
 हना नांम कऊं हवे ॥ लक्ष्मणा हो कनकोदरी नांम ॥ ते लडती बहती  
 नीतरहे ॥ नही वाहलो हो धणी रायजी स्वाम ॥ जो० ॥ ४ ॥ ल-  
 क्ष्मणा रांणी जीन धर्मणी ॥ प्रभु पुजाहो करती गीत ग्यांन ॥ कनको-  
 दरी जीन धर्मनी द्वेषणी ॥ करे प्रभुनीहो आसातना जाण ॥ जो० ॥  
 ५ ॥ एक दीन रांणी लक्ष्मणा ॥ घर चेत्ये हो पुज्या जीन देव ॥  
 स्थापना करी जीन मुरती ॥ विधि महीत हो करो जीनवर सेव ॥  
 जो० ॥ ६ ॥ लक्ष्मणा गटनीज मेळमें ॥ पाळे थीहो कनकोदरी जाण





लक्ष्मणा उपरे ॥ बाकी रयाहो हवे तेहनो रोग ॥ जो० ॥ १८ ॥ घणा  
 कर्म तें भोगव्या ॥ बाकी रयाहो हवे थोडा जाण ॥ पीछे मुख घणो  
 होवसी ॥ इम जाणीहो मन धर्मनें आण ॥ जो० ॥ १९ ॥ अंजनां  
 सुंदरी इम सुणी ॥ हवे लागी हो धर्म ध्याननें काज ॥ आवश्यक छए  
 साचवे ॥ मन भावेहो एने शीवपुर राज ॥ जो० ॥ २० ॥ इम रहे  
 अंजना वन मध्ये ॥ नीत प्रतेहो लहे जीनवर नाम ॥ गुफा एक आश्रम  
 कने ॥ तीहां दंपतीने हो रहवानो ठाम ॥ जो० ॥ २१ ॥ रात दीवस  
 सुखसु रहे ॥ गुफा मांहीहो धरती सुभ ध्यान ॥ आहार करे फल  
 फुलनो ॥ तिण वेलाहो अचरीज वण्यो तांम ॥ जो० ॥ २२ ॥ तपगळ  
 नायक सोभतो ॥ पट धारीहो मुनीचंद्र मूरीस्वांम ॥ तस प्रसादे जेतो  
 कहे ॥ ढाल पनरमी हो सोहे युक्तीमांन ॥ जो० ॥ २३ ॥

॥ दुहा ॥ इम रहती खूखे अंजनां ॥ आश्रम गुफा मजार ॥  
 नव मास पुरा ऊआ ॥ उपर दीन तीयचार ॥ १ ॥ बालक प्रसव्यो  
 तीण समें ॥ अंजना सुंदरी जाण ॥ विधि वीधान सहुए करया ॥  
 वसंत मालाचीत आण ॥ २ ॥ घडी एक्के अंतमें ॥ अंजनां हुइ सचेत  
 ॥ रुदन करे आक्रंद पणें ॥ अरवा लागी नेत्र ॥ ३ ॥ तीणवेलां  
 आकाशमां ॥ खैचर उड्यो जाय ॥ आक्रंद शब्द तेणें सुण्यो ॥  
 श्रवणकरी चीत लाय ॥ ४ ॥ प्रती सूर्य तीहां आवीयो ॥ अंजनां  
 सुंदरी पास ॥ अंजनां रोवे दुख भरी ॥ मुखे मेलनी स्वास ॥ ५ ॥

॥ ढाल १६ मी ॥ उंसा जलरी माठली ॥ तलफ  
 तलफ मरजाय ॥ खांविंद मोरा हो ए देशी ॥ अंजना  
 सुख सुदम भणे ॥ पवन पवन चीतधार ॥ खांविंद मोरा हो जीण



लक्ष्मणा उपरे ॥ बाकी रगोहो हवे तेहनो रोग ॥ जो० ॥ १८ ॥ घणा  
 कर्म ते भोगव्या ॥ बाकी रगोहो हवे थोडा जाण ॥ पीछे सुख घणो  
 होवमी ॥ इम जाणीहो मन भर्मनें आण ॥ जो० ॥ १९ ॥ अंजनां  
 सुंदरी इम सुणी ॥ हवे लागी हो भर्म ध्याननें काज ॥ आवश्यक छए  
 साचवे ॥ मन भावेहो एने गोवपुर राज ॥ जो० ॥ २० ॥ इम रहे  
 अंजना वन मध्ये ॥ नीत प्रतेहो लहे जीनवर नाम ॥ गुफा एक आश्रम  
 कने ॥ तीहां दंपतीने हो रहनानो ठाम ॥ जो० ॥ २१ ॥ रात दीवम  
 सुखसुं रहे ॥ गुफा मांहीहो धरती सुभ ध्यान ॥ आहार करे फल  
 फुलनो ॥ तिण बेलाहो अचरीज वण्यो तांम ॥ जो० ॥ २२ ॥ तपगछ  
 नायक सोभतो ॥ पट धारीहो मुनीचंद्र मूरीस्वाम ॥ तस प्रसादे जेनो  
 कहे ॥ ढाल पनरमी हो सोहे युक्तीमान ॥ जो० ॥ २३ ॥

॥ दुहा ॥ इम रहती सुखे अंजनां ॥ आश्रम गुफा मजार ॥  
 नव मास पुरा ऊआ ॥ उपर दीन तीयचार ॥ १ ॥ बालक प्रसव्यो  
 तीण समें ॥ अंजना सुंदरी जाण ॥ विधि वीधान सद्गुण करया ॥  
 वसंत मालाचीत आण ॥ २ ॥ बडी एकके अंतमें ॥ अंजनां हुड सचेत  
 ॥ रुदन करे आक्रंद पणें ॥ झरवा लागा नेत्र ॥ ३ ॥ तीणवेलो  
 आकाशमां ॥ ख्यैचर उड्यो जाय ॥ आक्रंद शब्द तेणें सुण्यो ॥  
 श्रवणकरी चीत लाय ॥ ४ ॥ प्रती मूर्य तीहां आवीयो ॥ अंजनां  
 सुंदरी पास ॥ अंजनां रोवे दुख भरी ॥ मुखे मेलनी स्वास ॥ ५ ॥

॥ ढाल १६ मी ॥ उसा जलरी माठली ॥ तलफ  
 तलफ मरजाय ॥ खांविंद मोरा हो ए देशी ॥ अंजना  
 मुख सुडम भणे ॥ पवन पवन चीतधार ॥ खांविंद मोरा हो जीण



धरमी नरनो नाथ ॥ साहीव मोराहो ॥ श्रीविजय मुनीचंद्र सुरीस्वरु  
॥ रापे धरमनी आथ ॥ सा० ॥ गुरु गुणनो नही पारछे ॥ १२ ॥  
सोलमी ढाळे अंजनां ॥ वेठीवी मानमां आय ॥ सा० ॥ हवे आवी  
तेहनी शुभ दिश जेतो वोळे मुखदाय ॥ सा० गु० ॥ १३ ॥

॥ दुहा ॥ चतुर वीसक्षण जीवडा ॥ वेठ विमानमां आय ॥ ते  
उड्यो आकाशमां ॥ पवन वरावर जाय ॥ १ ॥ तीहां अचरोज हुओ  
अती भलो ॥ सुंण जो तेनी वात ॥ अंजनां गोदसुं नांनडो ॥ पड्यो  
महीतल जात ॥ २ ॥ परवत शीखर उपरे ॥ पड्यो बालक तीणवार ॥  
परवत थरव्यो तीण समें ॥ टुंक चुरण समथाय ॥ ३ ॥ माता वील-  
वंती घणी ॥ बालक कारणे जाण ॥ प्रति मुरज विद्याधर ॥ पुछे  
भन हीत आंण ॥ ४ ॥ अंजनां कहे सुंण वंधवा ॥ भाणुडो महीतल  
जाण ॥ के मुंओ के जीवतो ॥ खवर करो चीत आंण ॥ ५ ॥ प्रति  
मुरज विद्याधरे ॥ थांभ्यो आप विमान ॥ खवर करे बालक तणी ॥  
परवत उपर जाण ॥ ६ ॥ आयो टुंकरें उपरा ॥ बालक दीठो आप  
॥ कुसले खेमे रमी रयो ॥ जोम संसेड्यो साप ॥ ७ ॥ प्रती मुरज  
दीठो सही ॥ पड्यो कुमर ते आही ठांण ॥ परवतनुं चुरण कस्युं ॥  
कुमरते कुसले जाण ॥ ८ ॥ देख कुमरनें कर ग्रथो ॥ वेठो विमां-  
नमां आय ॥ तुरत चळायो तीहां थकी ॥ हनरुह नयरे जाय ॥ ९ ॥  
तुरत आया नीज नयरमें ॥ दीन दम वीता जाण ॥ भांणुडोळे बालको  
॥ तेहनां करे वग्यांण ॥ १० ॥ मृणेज माता अंजनां ॥ मृणे सरजन  
परीवार ॥ बळके तो हनुमंतनो ॥ तेहनो मृणो विम्भार ॥ ११ ॥



( १२२ )

धरमी नरनो नाथ ॥ साहीव मोराहो ॥ श्रीविजय मुनीचंद्र सुरीस्वरू  
॥ रापे धरमनी आथ ॥ सा० ॥ गुरू गुणनो नही पारछे ॥ १२ ॥  
सोलमी ढाले अंजनां ॥ वेठीवी मानमां आय ॥ सा० ॥ हवे आवी  
तेहनी शुभ दिश जेतो बोले सुखदाय ॥ सा० गु० ॥ १३ ॥

॥ पुहा ॥ चतुर वीसक्षण जीवडा ॥ वेठ विमानमां आय ॥ ते  
उड्यो आकाशमां ॥ पवन वरावर जाय ॥ १ ॥ तीहां अचरीज हुओ  
अती भलो ॥ सुंण जो तेनी वात ॥ अंजनां गोदसुं नांनडो ॥ पड्यो  
महीतल जात ॥ २ ॥ परवत शीखर उपरे ॥ पड्यो बालक तीणवार ॥  
परवत थरवयो तीण समें ॥ हुंक चुरण समथाय ॥ ३ ॥ माता वील-  
वंती घणी ॥ बालक कारणे जाण ॥ प्रति मुरज विद्याधरू ॥ पुछे  
भन हीत आंण ॥ ४ ॥ अंजनां कहे गुण बंधवा ॥ भाणुडो महीतल  
जाण ॥ के सुंओ के जीवतो ॥ खबर करो चीत आंण ॥ ५ ॥ प्रति  
मुरज विद्याधरे ॥ थांभ्यो आप विमान ॥ खबर करे बालक तणी ॥  
परवत उपर जाण ॥ ६ ॥ आयो हुंकनें उपरा ॥ बालक दीठो आप  
॥ कुसले खेमे रमी रयो ॥ जोम संसेड्यो साप ॥ ७ ॥ प्रती मुरज  
दीठो सही ॥ पड्यो कुमर ते आही ठांण ॥ परवतनुं चुरण कस्युं ॥  
कुमरते कुमले जाण ॥ ८ ॥ देख कुमरनें कर ग्रथो ॥ वेठो विमां-  
नमां आय ॥ तुरत चळायो तीहां थकी ॥ हनरूह नयरे जाय ॥ ९ ॥  
तुरत आया नीज नयरमें ॥ दीन दम बीता जाण ॥ भांणुडोछे बालको  
॥ तेहनां करे वखांण ॥ १० ॥ मुंणेज माता अंजनां ॥ मुणे सज्जन  
परीवार ॥ बळके नो हनुंमंतनो ॥ तेहनो मुणो विस्तार ॥ ११ ॥





॥ देसी कडव्यानी ॥ आनीयो तांमकर जोर वड फोस्तो ॥  
 वरून राज मनगीय आंणी ॥ सुभट मटविकट माये करी आपणा ॥  
 रोस चडीयो वटे अशुभ नांणी ॥ १ ॥ आ० ॥ आवरे मुहजो म्हा  
 मेले नही ॥ आज मृगराज सुतो जगाज्यो ॥ धरण भुजावतो माहमो  
 आवतो ॥ छोट धरी लोहगु सीर उडाज्यो ॥ २ ॥ धरणी भटभडी ॥  
 गडीय दमांमा धुनी ॥ दहडीसे प्रवरया सवला मुरा ॥ तुरंग भट  
 पाखरया ॥ महस हाते भरया ॥ नासता मासता रणस तुरा ॥ आ०  
 ॥ ३ ॥ बांण वरसे घणा ॥ मूढ हाथां तणा ॥ गयणखी रयण  
 अंधार कीयो ॥ भाट भड उछली सवल खंडातणी ॥ पवनजी जीहां  
 प्रथम पावदीधो ॥ ४ ॥ झुठडो शत्रुदल मुड करतो प्रवल ॥ गाजतो  
 गाज आवाज करतो ॥ केड केवोहण्या शीश दुरे लुण्यां ॥ अंग उछ-  
 रंग धरी जंग फीरतो ॥ ५ ॥ अधिक मछराल पवन इम वाचाल ॥  
 घाव घमसांण हेराण कीधा ॥ घाव ठांमे रूधिर विंवधारा पडे ॥  
 अरीतणा जीव कीण काढ लीधा ॥ आ० ॥ ६ ॥ इम लज्यो आथ-  
 ल्यो कुंवर अरी सेन्यमु ॥ करून राजनें ततकाल बांध्यो ॥ बांधकर  
 आपणा साथमें आंणियो ॥ साहमो कीण हीन तीर सांध्यो ॥ ७ ॥  
 काय पवनजी नांख्यो दल फोजमें ॥ वरूननें जीत यस वास लीधो ॥  
 तीणवार रावणें पवन कुमारनें ॥ राज सनमान अधिकार दीधो ॥  
 आ० ॥ ८ ॥ निभ्रंछी वरूननें फीटकार देड करी ॥ अही रावणें  
 तेहनो राज सुंपद कीधो ॥ खरणी भरतो सही आंण मांने सदा ॥  
 पवन कुमारनो काज सीधो ॥ आ० ॥ ९ ॥ तपगछ नायक जगत  
 शुरू राजता ॥ श्रीवीजय मुनीचंद्र मुरी सध्यावो ॥ एहना पुन्य प्रवळ



नजी ॥ पोहता नीज आवाम ॥ ल० ॥ तिहां विसामो लेइ करी ॥  
 पोहता मातानें पास ॥ ल० ॥ प० ॥ ६ ॥ पाय लागे माय वापनें ॥  
 पुछे कुशलनें खेम ॥ ल० ॥ भक्ती बीधी सवी साचवे ॥ मनमां  
 आंणी बहु प्रेम ॥ ल० ॥ प० ॥ ७ ॥ तापीछे राग पवनजी पुछे  
 अजनानी बात ॥ ल० ॥ मात पीता निलखा थड ॥ समजावे बहु  
 भांत ॥ ल० ॥ पं० ॥ ८ ॥ कुलबहु थड कुल संपणी ॥ लजीत भयो  
 सहुराज ॥ ल० ॥ गर्भ बधो नेहनी कुनमे ॥ विण साझा मद्  
 काज ॥ ल० ॥ प० ॥ ९ ॥ तीण कारण तुज नारनें ॥ मुकी पीढर  
 नाम ॥ ल० ॥ गरम जो होवे मुग उपरा ॥ तो मत करजो तुम भाम  
 ॥ ल० ॥ प० ॥ १० ॥ तपगन्ध नापक गोभता ॥ श्रीनिजे मुनीचंद  
 मूर्ति ॥ ल० ॥ उमणीमणी ठाणे जेवो कहे ॥ पवनजी उम  
 दमनीम ॥ ल० ॥ प० ॥ ११ ॥ मान ॥

॥ दुहा ॥ मात पीता तुमे गांभजो ॥ कीनो मद् भकाज ॥  
 मरी ॥ म कहे क नेह ॥ तीण गगनो मरी राज ॥ १ ॥ अजनो मनी  
 मरी नी ॥ ने कलानी नाम ॥ तीण गग नारी को नही ॥ जनु  
 मरी मरी ॥ २ ॥ म कहे पवन कृपागजी ॥ मात पीताने गांभ ॥  
 म दीम मरी मरी हा ॥ मद् कृपा मरी गांभ ॥ ३ ॥ बीनक वात नेणे  
 मरी मरी मरी मरी ॥ जीव तीण भागे नही ॥ नयण मरी  
 मरी ॥ ४ ॥ मरी मरी मरी मरी ॥ केला कहे तुम दोष ॥ मीया  
 मरी ॥ मरी मरी मरी ॥ वाणदे मतयां रोष ॥ ५ ॥ मात पीता कहे कृ  
 मरी ॥ मरी मरी मरी मरी ॥ मरी मरी मरी मरी ॥ मरी मरी मरी  
 मरी ॥ ६ ॥ मरी मरी मरी मरी ॥ मरी मरी मरी मरी ॥ मरी मरी मरी



नींद गइ नेंणा थकी ॥ में ॥ चिंता चीनन माय ॥ पा० ॥ गुग देयाडो  
 आपणो ॥ में ॥ तीम मोनें गुग थाय ॥ पा० ॥ ५ ॥ कहे तुं गुंदर  
 कीहां गइ ॥ में ॥ कीम नाने घर आज ॥ पा० ॥ तुम नीन मुंनीमे  
 जडी ॥ में ॥ तुम वीण मरे न काज ॥ पा० ॥ ६ ॥ गीम करी मुझ  
 सं रहीं ॥ में ॥ पातक मोटो जाण ॥ पा० ॥ गुंदर हने मुग बोलजे ॥  
 में ॥ दया मुझपेतुं आण ॥ पा० ॥ ७ ॥ एह हासुं कीम कीजीये ॥ में  
 ॥ इण हांमी जीव जाय ॥ पा० ॥ प्राण हुवाले प्राहुणा ॥ में ॥ के  
 द्यो दरसन आय ॥ पा० ॥ १८ ॥ देव कोड अपहरि गयो ॥ में ॥ के-  
 पडी उझड मांय ॥ पा० ॥ के कोइ जीव डसी गयो ॥ में ॥ के मरण  
 गई वन मांय ॥ पा० ॥ ९ ॥ चितारे नृप गुण नारिनां ॥ में ॥ वी  
 लवंतो वारोवार ॥ पा० ॥ मन मुंजे तन टलवले ॥ में ॥ नयणन खंडे  
 धार ॥ पा० ॥ १० ॥ इम जावे नृप रोवतो ॥ में ॥ सबही दीन  
 अरू रात ॥ पा० ॥ सहुए करे काम आपणो ॥ में ॥ कुंवरनें कछु न  
 सुहात ॥ पा० ॥ ११ ॥ हा हा हवे हुंशुं करूं ॥ में ॥ कीहां जाउं कीर-  
 तार ॥ पा० ॥ वनमां हुंढे चीहु दीसे ॥ में ॥ कीहां हीन पाड नार ॥  
 पा० ॥ १२ ॥ हे हे मोह नरिंदजी ॥ में ॥ अवलामें एवडा थोक ॥  
 पा० ॥ जेतो कहे ढाल वीसमी ॥ में ॥ कर्मनें न सके रोक ॥  
 पा० ॥ १३ ॥

॥ **पुहा** ॥ इम वीलवंता पवनजी ॥ रोवे भरभर नैण ॥ तीण वेल  
 कहे मंत्रवी ॥ सुणरे सजन सेंण ॥ १ ॥ नारी पगनी भोजडी ॥ सरीपी  
 दोनुं जाण ॥ हाजीर होय तो केवटो ॥ नहीं तो होणो अजाण ॥ २ ॥  
 इम सुंणी कहे पवनजी ॥ सुंणरेस जन वात ॥ केतो मीलसी मोय



थी जस बाधतो ॥ विद्या भणें वीसेप ॥ ३ ॥ नृप थी वीद्या मोटकी ॥  
 नृप नीज देश पुजाय ॥ वीद्या जग सहु पुज्यले ॥ माने राणो राय  
 ॥ ४ ॥ पंच वरस पुत्र पालीये ॥ दसे भणावे सोय ॥ सोल वरसो  
 सुत थयो ॥ पुत्र मीत्र सम जोय ॥ ५ ॥

॥ ढाल २३ मी ॥ वेढले चार घणो ठे राजा ॥ वातां  
 केम करोठो ॥ ए देशी ॥ राग केदारो ॥ इम जांणीते पुत्र-  
 नरे ॥ भणवा मुंके (सार) ताय ॥ पाटी खडीया छेइ संचरेरे ॥ पुत्र  
 नैसाले जाय ॥ कुमरजी विद्या भणें सुख कार ॥ जांणे मुगुरुनो उप-  
 कार ॥ कु० ॥ १ ॥ शृंगार पेहेरी चढे हाथीयेरे ॥ आपे फोफल पान  
 ॥ माहाजन सहृण रंजीयारे ॥ लोक देवे बहुमान ॥ कु० ॥ जां० २ ॥  
 फांमनी पुठे गावतीरे ॥ बोले चीरदावली भाट ॥ पंडित घर कुमर  
 आवीयोरे ॥ देवे चीरोदक पाट ॥ कु० ॥ जां० ॥ ३ ॥ पंडित नें वली  
 आपीयारे ॥ दांन अनेक प्रकार ॥ फुली खडीया आपतोरे ॥ नैसा-  
 ल्पानें सार ॥ कु० ॥ जां० ॥ ४ ॥ विद्या भणी कुमर आवीयोरे ॥ हर-  
 प्या मायनें ताय ॥ बहुतर कला सीखी वलीरे ॥ मुणो नांग कहवाय  
 ॥ कु० ॥ जां० ॥ ५ ॥ बहुतर कला नरनो कहुरे ॥ चोमठ नारीनी होग  
 ॥ धर्म कर्म कुमर जाणतोरे ॥ राज नीति जांण मोय ॥ कु० ॥ जां० ॥ ६ ॥  
 मंत्र जंत्र जांपटी जाणतोरे ॥ जांणे कनकनी मीध ॥ रंगे रंगाडे  
 जुवटारे ॥ जांणे पर घरगीद्ध ॥ कु० ॥ जां० ॥ ७ ॥ टाकण शाकण ने  
 नटेने ॥ जांणे नारीना मोग ॥ जांणे मेवक जांगवीरे ॥ जांणे सयल मंजोग  
 ॥ कु० ॥ जां० ॥ ८ ॥ शयन वीलेपन जाणतोरे ॥ वैद्यक जांणे उह्यास ॥  
 जांणे नाद गीत नासवुरे ॥ जांणे वचन वीलास ॥ कु० ॥ वी० ॥ ९ ॥





॥ दुहा ॥ इम पिता भणी हनुमानजी ॥ गंगा कला सागरांन  
 ॥ पवनजीनें अंजनां ॥ देखी रहे मुग्गमांन ॥ १ ॥ नीण सान्धनें तीण  
 समे ॥ वरुण राज वरी रीम ॥ आनयो लंका उपरे ॥ लट्ठा नीसगा  
 वीम ॥ २ ॥ रावण नेट्या राजनी ॥ भेजी पपी मार ॥ मेन्या मह  
 त्त्यारी करी ॥ आवज्यो जुध मजार ॥ ३ ॥ हनुरद नयरमें हृत आ-  
 वीयो ॥ प्रति सर्यने पाग ॥ हनुमत मुग्गमुं डम कहे ॥ चीतमां थड्य  
 हुलाय ॥ ४ ॥ कोण देमनां राजनी ॥ अठे आया कीण काज ॥ प्रति  
 सर्य कहे उताए ॥ मुक्कयोळे रावण राज ॥ ५ ॥ जुधमें लडवा कारणें  
 ॥ पत्नी भेजीळे आज ॥ वरुण सांमा भडवुं अळे ॥ ओर नही कोड  
 काज ॥ ६ ॥ हनुमत कहे हुं जावसु ॥ रावण राजाने पास ॥ जुधजी-  
 तीनें आवसु ॥ एहवुंळे मुज वीसवास ॥ ७ ॥ एहयो कही हनुमतजी  
 ॥ चाल्या जुध मजार ॥ साथे जोधा मुरमां ॥ तेहनो मूणोथेवी  
 चार ॥ ८ ॥ केड मांनी मछरालवा ॥ केड अवनी बलवंत ॥ रोसाला  
 हट वादीया ॥ केहतां नावे अंत ॥ ९ ॥ जाय रावणनें भेटीयो ॥ हनु-  
 मत कीध जुहार ॥ कीहांळे वरुणनी फोजए ॥ तेहनो कहो वीस्तार  
 ॥ १० ॥ इम मुणी राय रावणे ॥ करी चतुरंग सेन्य तीयार ॥ हनुमत  
 रावण दोय सही ॥ गया वरुणने पास तीवार ॥ ११ ॥

॥ ढाल २४ मी ॥ देशी करुखानी ॥ आवरे वरुण कर-  
 जुध हवे जोरसुं ॥ मन मांहे मत त्रास आणें ॥ सुतो मृगराज आज  
 हाथे तें जगाव्यो ॥ हवे ताहरो दीन फीरयो तुं साच जाणें ॥ आवरे  
 वरुण कर जुध हवे जोरसुं ॥ १ ॥ चढ्यो वरुण मन रीस अती आं-  
 णनें ॥ सेन्य चतुरंगसुं जुध ठाणें ॥ चक्र वाक जीम शेन्य सवलीरसी



पुकारता ॥ खडग लेइ शक्ती तव वेल आवे ॥ भाट वीरदावली बोले ॥  
 वीरावली ॥ मूणी जोधारण वीस धावे ॥ आ० ॥ १२ ॥ केइ छेदता  
 केइ भेदता ॥ केइ बोलता बोल वंका ॥ नोयतां गड गडे ढोलते दडदडे ॥  
 वाजाते वाजे नीसांण डका ॥ आ० ॥ १३ ॥ ग्रीश उडाडता ॥  
 जोधानें पाडता ॥ ताडता वेरीनें वहे रुद्र खाला ॥ मेह परनालज्यु न-  
 यरना खालज्यु ॥ वहे रक्तना जेम नदीय नाला ॥ आ० ॥ १४ ॥  
 जुय इण परकरी वरुण ते नाठो फरी जीत हुइ हनुमंत केरी ॥ जय जय  
 कार थइ रयो हनुमंत जीतगयो ॥ त्युंहीजीत होज्यो कविय तेरी ॥  
 आ० ॥ १५ ॥ तपगछ नाथ जगत सीर कीजो हाथ ॥ जपुंछुं मालामें  
 नाम तेरो ॥ श्री विजय मुनीचंद्र सुरीस तपो ॥ जगत जसवास लीजो  
 घणेरो ॥ आ० ॥ १६ ॥ ढाल चौविसमी जीत हनुमंतनी ॥ बध्यो  
 जगतमां यस वास तेरो ॥ जेत सागर कहे पुन्यथी सह लहे ॥ करो  
 भवी धर्म ज्युंछे भव फेरो ॥ आ० ॥ १७ ॥

॥ डुहा ॥ वरुणनें हनुमंत जीतीयो ॥ बांधी लायो तेह ॥ राव-  
 णनें कहेंओ लखो ॥ ताहरो चोरछे एह ॥ १ ॥ रावण मन हरख्यो  
 घणु ॥ दीयो अधीक तस मांन ॥ कन्या यसोमति दांनदी ॥ लीनी  
 श्रीहनुमान ॥ २ ॥ देखी लका भुमीका ॥ नीरख्या वन आराम ॥  
 तीहांथी चाल्या हनुमंत जी ॥ पोहता हनरूह गांम ॥ ३ ॥ मात  
 पीतानें पाय नमी ॥ जीत वधाइ कीथ ॥ प्रती मुरजके पाय पंड्यो ॥  
 जगतमां सोभा लीथ ॥ ४ ॥ डम रहतां दीन केतले ॥ बोल्यो पवन  
 जय आप ॥ हवे जालो देश आपणें दयाद करेछे माय वाप ॥ ५ ॥

॥ ढाल १५ मी ॥ उगो धनदीन आज ॥ सफट्योरे  
 जनम सहरीरी ॥ एदेशी ॥ डम विचारी मन मांय ॥ पवनजी



वनपां आया जाण ॥ धर्मगोपगरी गमोगम्या ॥ मानता जीनरा  
आण ॥ ४ ॥ तेहमुणो मालाद नप ॥ गया नंदननें काज ॥ आगर  
जांणी मुनीगम् एमकहे माहाराज ॥ ५ ॥

॥ ढाल २६ मी ॥ रामचंद्र केरा वागमां ॥ दोय आंवा  
पाका वेलो ॥ अहो दो० ॥ ए देशी ॥ धर्मनडो गमारमां मुणो  
भवी प्राणीरेलो ॥ अहो ॥ मु० ॥ दांन सीयल तप भावनां ए शुभ  
जांणीरेलो ॥ अ० ॥ शु० ॥ एह जगतमां सारछे मोक्ष नीशांणीरेलो  
॥ अ० ॥ मो० ॥ भवभय टारन सांभलो जीन वांगीरेलो ॥ अ० ॥  
जी० ॥ १ ॥ ए संसार असारछे मुणो राजारेलो ॥ अ० ॥ सु० ॥  
जगतनी माया कारमी मुणो माहाराजारेलो ॥ अ० ॥ मु० ॥ धर्म-  
वंतजे प्रांणीया पांमे मूख ताजारेलो ॥ अ० ॥ पां० ॥ मुरग मोक्षनां  
सुखडांते पांमछे जाजारेलो ॥ अ० ॥ पां० ॥ २ ॥ क्षीण बीते जे का-  
लनी ते सह्यु जावेरेलो ॥ अ० ॥ ते० ॥ आउपनी बीती जे घडी ते  
नवी फीर आवेरेलो ॥ अ० ॥ न० ॥ धर्मबीहुणो जीवडो गोता ज-  
गमें खावेरेलो ॥ अ० ॥ गो० ॥ ३ ॥ धर्म धर्म करतो थको जीव जा  
छेरेलो ॥ अ० ॥ जी० ॥ पड्यो नरक अघोरमां दुख पाछेरेलो ॥  
अ० ॥ दु० ॥ मरतांकी वेला मांनवी घणु पोस्ताछेरेलो ॥ अ० ॥ घ०  
॥ अंतसमे जीवनें शरणो कोइ नथीछेरेलो ॥ अ० ॥ फी० ॥ ४ ॥  
धन छोडीने मरी गयो फीर कुण खाछेरेलो ॥ अ० ॥ फी० ॥ धन  
खाछे कोइ दुसरा दुख पोते पाछेरेलो ॥ अ० ॥ दु० ॥ इण भव पर  
भव मांयनें तोरो कुण थाछेरेलो ॥ अ० ॥ तो० ॥ पुन्य पाप दोय  
लेइने जीव एकलो जासेरेलो ॥ अ० ॥ जी० ॥ ५ ॥ इम मुंणोराय



जोए ॥ मतदेजो केहनें दुखतो ॥ ३ ॥ राज काज सहु सुंपनेए ॥  
 बहु भलामण देयतो ॥ चारीत्र गुरु पासे ग्रहेए ॥ राजा राणी दो-  
 यतो ॥ ४ ॥ मुखे सभाधे रायजोए ॥ पाछे चारीत्र सारतो ॥ राज  
 काज करे पवनजीए ॥ तेहनो कहुंछुं वीचारतो ॥ ५ ॥ राज पाछे  
 नीति पणेंए ॥ जाणुं राजा रामतो ॥ मंत्री प्रधान जन सहुए ॥ करेछे  
 रायनो कांमतो ॥ ६ ॥ पटराणी अंजनां थइए ॥ हनुमत नाम कुमारतो  
 ॥ वसंत माला मोटी सखीए ॥ मानछे राज मजारतो ॥ ७ ॥ अजनां  
 पवन खेले रमेए ॥ रम रया मेहल मजारतो ॥ कवहीक वनक्रीडा  
 करेए ॥ कवहीक जल कीलोलतो ॥ ८ ॥ दोगंधक मुरनी परेए ॥  
 भोगवे भोग रसालतो ॥ भोजन भक्तीकरे घणीए ॥ दांन मान संभा-  
 लतो ॥ ९ ॥ तपगल्लनोए राजीयोए ॥ श्रीबीजयमुनी चंद्रसुरी रायतो  
 ॥ धर्मनीतीमां नीर्मलोए ॥ प्रणमैं छे तेहनां जनसहु पायतो ॥ १० ॥  
 ढाल सतावीसमी अति भलीए ॥ पवनजी पाछेछे राजतो ॥ जेतोकहे  
 भवी सांभलोए ॥ सारेछे जीनधर्ममुं काजतो ॥ ११ ॥

॥ दुहा ॥ राज राणी सुत सहीत ॥ पाछे राज अखंड ॥ अहनोग  
 अभीनव प्रेममुं ॥ पुर्व परे प्रचंड ॥ १ ॥ पुण्यपसाए भोगवे ॥ मन  
 वंछीत मुख्य भोग ॥ देव उगंध मुरनीपरे ॥ सुपनांमां नही सोग ॥ २  
 ॥ टण अवसर तीहां आवीया ॥ आचाराज पद धार ॥ श्रीचंद्रसुरी  
 मीरोमणी ॥ पंचमय परीवार ॥ ३ ॥ दरमण तेहनो देखतां ॥ पातीक  
 दूर पृथाय ॥ वांछा वीत्र टले सऊ ॥ नामें नव नीध थाय ॥ ४ ॥  
 वन पालके वधामणी ॥ नरवरनैं जद दीध ॥ दांन दीधुं तेहनें घणु ॥  
 मन वंछीन मुख्य कीध ॥ ५ ॥ आटंवर अर्याके करी ॥ जेम जमालीजाय





नवविध परीग्रह छोडीयेरे ॥ दसविध यतीधर्म धार ॥ आदर करीनें  
 पालीयेरे ॥ तो पांमें भवपार ॥ वुटक ॥ तो पांमें भवपार ते जाणो ॥  
 प्रभुको नांम ते चीतमां आणो ॥ इण वीध धर्म कथो ते पालो ॥ अ-  
 शुभ मार्गनां दुपण टालो ॥ जी० ॥ ५ ॥ ढाल ॥ एह शरीर अस्वास-  
 तोरे ॥ जीनवर भाषे एम ॥ सिंध्या रागनें सारीपुंरे ॥ तीण उपर स्यो-  
 प्रेम ॥ वुटक ॥ तीण उपर स्योप्रेम ते दाखो ॥ मनवचकायानें वस-  
 करी राखो ॥ शुभ मारगनां कामजो कीजे ॥ परउपगार करीयश  
 लीजे ॥ जी० ॥ ६ ॥ धन जोवन जाणो एहवारे ॥ जेहवुं कुंजर कांन  
 ॥ खीण गांहें खेरूं होवेरे ॥ बादल छांया समान ॥ वुटक ॥ बादल  
 छाया समानं मुग्धांनी ॥ वोतरागनी एहवीछे वांणी ॥ खाय खर-  
 मनें लाहो ते लीजे ॥ कृपण होय संचय नवी कीजे ॥ जी० ॥ ७ ॥  
 ढाल ॥ नदीयवेग सरीपो कहोरे ॥ जोवनवय दीक्ष चार ॥ छेह  
 टेखावे छेहडेरे ॥ जातां न लागेवार ॥ वुटक ॥ जातां न लागेवार स-  
 नेही ॥ जतन करंतां वीणछे देही ॥ एहवुं जांणी भक्ती कीजे ॥ जीन-  
 पुजा करी लाहो लीजे ॥ जी० ॥ ८ ॥ ढाल ॥ जीवने पीण जातां  
 थकारे ॥ वार न लागे कांय ॥ जल पंपोटा तणी परेरे ॥ अथीर एह  
 कहेवाय ॥ वुटक ॥ अथीर एह कहेवायरे मानव ॥ वीणछे केट देव-  
 जो टांनव ॥ अमर कांठ नही टण जा जगमें ॥ काल भमंछे पगलां  
 पगमें ॥ जी० ॥ ९ ॥ ढाल ॥ वीत्या वामर जे जायछेरे ॥ ते फीर  
 मुळ न आय ॥ धमकरी मफलो करांरे ॥ जीम दुखदूर पृलाय ॥ वु-  
 टक ॥ जीम दुखदूर पृलायते जाणो ॥ गुरु उपदेश ते एमो नम्राणो  
 ॥ मामली पयनजी थया वैरागी ॥ ममत्ता छुटी समता मळेवागी ॥



म० ॥ तेह प्रमाणे पाल दुर करे सह न्यायिनां ॥ म० ॥ ५ ॥ म० ॥  
 गुमती गुप्ती नीतधार ॥ दया दील मांढे आंणीये ॥ म० ॥ म० ॥  
 साधवुं सकल गरीर ॥ चार कणाय दुरे करी ॥ म० ॥ ६ ॥ म० ॥  
 उण वीध कलुं चारीत्र ॥ अनंत तीर्थकर उम कहे ॥ म० ॥ म० ॥  
 पंच माहाव्रत धार ॥ जीम छुटे भन दुख थकी ॥ म० ॥ ७ ॥ म० ॥  
 हवे मत लावोदेर ॥ स्त्रीण क्षीण जाय आयुपतणी ॥ म० ॥ म० ॥  
 घडीय वरप सम जाय ॥ दीवरा नीते युग मारीपो ॥ म० ॥ ८ ॥  
 म० ॥ पाको पीपल पांन ॥ कीम ठेरे वृक्ष उपरे ॥ म० ॥ म० ॥ डाभ  
 अणी जलघुंढ ॥ वायु चलंते ग्वीर पडे ॥ म० ॥ ९ ॥ म० ॥ तीम  
 मानुपनी देह ॥ काल आयक क्षपटले ॥ म० ॥ म० ॥ मात पीता प-  
 रीवार ॥ उभा डवडव रोयरया ॥ म० ॥ १० ॥ म० ॥ काल न चुके  
 फाल ॥ जीम वाज क्षपटे चड कलो ॥ म० ॥ म० ॥ नही वावे तीर वं-  
 दुक ॥ नही कोइ मारे वरसीये ॥ म० ॥ ११ ॥ म० ॥ नही कोइ हा  
 कोन हुक ॥ नही कोइ मार न पीटले ॥ म० ॥ म० ॥ काया नगरके  
 मांय ॥ हाहाकार थइ रयो ॥ म० ॥ १२ ॥ म० ॥ तीण बेला नही  
 कोय ॥ शरणो देवगहारले ॥ म० ॥ म० ॥ नही कोइ आय उपाय  
 ॥ मंत्रयंत्र जडी ओपदी ॥ म० ॥ १३ ॥ म० ॥ मात पीता परीवार ॥  
 छुत दारा सविकारमां ॥ म० ॥ म० ॥ नही कोइ मंत्रीमेल ॥ सगा स-  
 णीजा कोइ नही ॥ म० ॥ १४ ॥ म० ॥ एक सगो अरीहंत ॥ पुन्य  
 पाप दोय संग चले ॥ म० ॥ म० ॥ काचनी कुंपी प्रमाण ॥ मांनुप  
 देही अःसारले ॥ म० ॥ १५ ॥ म० ॥ मरण समे होवे ग्यान ॥ सम-  
 कीतीनें अवाधि नीरमलो ॥ म० ॥ म० ॥ मारग परभवनो जाण ॥



मृ० ॥ ७ ॥ श्रीमानंदेव मरी जगमोभताजी ॥ श्रीवीजय प्रभ जग  
 भांण ॥ श्री जयानंद मुरी भव केरसीजी ॥ श्रीरवि प्रभा आदीन्य प्र-  
 मांणरे ॥ प्रा० ॥ मृ० ॥ ८ ॥ श्रीमजोदेव मरी जग जग लीयोजी ॥  
 श्रीमसुन्न मरी पदवंत ॥ श्रीमान देवमुरी जगदीपताजी ॥ श्रीवीमल  
 चद्रमरी भाग्यवंतरे ॥ प्रा० ॥ मृ० ॥ ९ ॥ श्रीउद्योतन मरी रविजिम  
 नपाजी ॥ श्रीमर्वदेव मरीउंद्र ममान ॥ श्रीदेवमरी देवपरे सोभताजी ॥  
 श्री सर्व देवमुरी माने आणारे ॥ प्रा० ॥ मृ० ॥ १० ॥ श्रीमजोभद्र  
 मुरीनी आंणनेंजी ॥ पाले श्रीमुनीचंद्र मुरोम ॥ श्रीभजीत देवमुरी ज-  
 ग जीतीयाजी ॥ श्री विजयसिंह मुरी तेहनां जीत्यरे ॥ प्रा० ॥ मृ०  
 ॥ ११ ॥ श्री सोमप्रभ मुरी जग नीरमलाजी ॥ श्रीजगचद्र मुरो नम  
 पाट ॥ श्रीदेवेंद्र मुरीस्वर जांणीयेजी ॥ श्रीधर्मगोप मुरीनं धर्मनो थाट  
 ॥ प्रा० ॥ मृ० ॥ १२ ॥ श्रीसोम प्रभ मुरी नमीउण करीजी ॥ श्रीसोम  
 तीलक करच्या ग्रंथ ॥ श्रीदेव सुंदर मुरी जादुगराजी ॥ श्रीसोम सुंदर  
 मुरी नीग्रंथरे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ श्रीमुनीचंद्र सुंदर मुरी शांति करां  
 रच्योजी ॥ श्रीरत्नशेखर मुरी रत्न समान ॥ श्रीलक्ष्मीसागर मुरी  
 चीत नीरमलाजी ॥ श्रीसुमती साधु मुरी साधु समानरे ॥ प्रा० ॥ मृ०  
 ॥ १४ ॥ श्रीहेम वीमल मुरी जक्ष वस कीयोजी ॥ श्री आनंद वीमल  
 मुरी मुखकार ॥ श्रीवीजय दान मुरी ग्यान दातार छेजी ॥ श्रीहीरवी-  
 जयमुरी आधाररे ॥ प्रा० ॥ मृ० ॥ १५ ॥ श्रीवीजयसेन मुरी जग-  
 जांणीये जी ॥ श्रीवीजय देवमुरी मनधार ॥ श्रीवीजय सिंह मुरीस्वरू-  
 जी ॥ श्रीवीजय प्रभमुरी अवधाररे ॥ प्रा० ॥ मृ० ॥ १६ ॥ श्रीवीजय  
 रत्न मुरोस्वर सोभताजी ॥ श्रीविजय क्षम्या मुरी मुखकार ॥ श्रीवि-











